अभ्युदय

चतुर्थ अंक, सितम्बर, 2023

प्रबन्ध सम्पादक मण्डल

प्रोफेसर (डॉ.) मनोज श्रीवास्तव
शैलेन्द्र त्रिवेदी

सम्पादक
दिनेश उन्नावी

उप सम्पादक
अनिरुद्ध सौरभ

सम्पादन सहयोगी
राहुल वर्मा, ऋषभ श्रीवास्तव
स्वयं श्रीवास्तव, धर्मेन्द्र शर्मा

विधिक सलाहकार
ओ.पी. तिवारी
महेन्द्र सिंह 'टीटू'

तकनीकी सलाहकार
अजय श्रीवास्तव 'राजन'
बृजेश शुक्ला

ग्राफिक्स एवं डिजाइन
अखिलेश त्रिवेदी, आरिफ खॉन
नीरज वर्मा, नरेश प्रजापति

अंकेक्षक
गिरीश शुक्ल (चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट)
जी.सी. शुक्ला एण्ड कं., ५४३, मोती नगर-उन्नाव

प्रकाशक

अभ्युदय सेवा संस्थान (रजि.)

कृष्णा नगर – उन्नाव

मुद्रक : ओम ऑफसेट प्रिण्टर्स, "मिश्रा मार्केट", बाबूगंज–उन्नाव

अभ्युदय सेवा संस्थान, उन्नाव (रजि.)
नव सृजन के हम चितेरे

अनुक्रमणिका

क्रमांक	लेख/कविता का शीर्षक	लेखक / कवि	पृष्ठ संख्या
1.	शुभकामना सन्देश	विभिन्न विभूतियाँ	05 से 11
2.	वाणी वन्दना	दिनेश उन्नावी	12
3.	सम्पादक की कलम से	दिनेश उन्नावी	13
4.	संरक्षक की कलम से	डॉ. मनोज श्रीवास्तव	14
5.	अध्यक्ष की कलम से	डॉ. प्रभात सिन्हा	15
6.	अभ्युदय आज तक	अनिरूद्ध सौरभ	16
7.	विभिन्न क्षेत्रों में अद्यतन सम्मानित विभूतियाँ	.....	17
8.	प्रसंगहीनता के दौर में साहित्य	डॉ. यतीन्द्र सिंह कुशवाहा	18
9.	निन्दा एक रोमिंग चार्ज की तरह	डॉ. मीनाक्षी गंगवार	21
10.	आत्महत्या नहीं	कृपाशंकर मिश्र 'खलनायक'	22
11.	विलायती बैंगन और शैतानी सेब	प्रभाशंकर उपाध्याय	24
12.	शालिग्राम जी का राम हो जाना	अखिलेश ओमर	26
13.	सम्बन्धों में समर्पण होना ही चाहिए	सर्वेश तिवारी 'श्रीमुख'	27
14.	दो रुपये की चोरी (लघु कथा)	प्रेम कुमार सिंह	28
15.	बारात फिर से आयेगी (कहानी)	कृपाशंकर मिश्र 'खलनायक'	29
16.	साहित्यिक विभूति : दादा चन्द्रिका प्रसाद कुशवाहा	दिनेश उन्नावी	32
17.	निरुत्तर (लघु कथा)	शैलेन्द्र त्रिवेदी	33
18.	सफलता की कुंजी : उद्यम	राकेश वर्मा	34
19.	अर्द्धनारीश्वर	सिम्पी पटेल	38
20.	विष पीने की होड़ मची है (गीत)	ज्ञान प्रकाश 'आकुल'	42
21.	कोई गीत नहीं गाता है (गीत)	महेन्द्र पाल सिंह	42
22.	बड़े-बड़े मंचों पर	चन्द्रेश शेखर	43

अनुक्रमणिका

क्रमांक	लेख/कविता का शीर्षक	लेखक / कवि	पृष्ठ संख्या
23.	जनम–जनम तक हम	ज्ञान प्रकाश 'आकुल'	43
24.	यह षड़्यंत्रों की महाकथा	स्वयं श्रीवास्तव	44
25.	अम्मा के दिल में	राकेश मिश्र सरयूपारीण	44
26.	कितना आसान था (कविता)	राजेश मल्ल	45
27.	धरती के कागज पर (गीत)	भारत भूषण	45
28.	श्रृंगार है हिन्दी (गीत)	राजीव राज	46
29.	पलकों पे उठा लो	दुष्यन्त कुमार	46
30.	प्रीति किसके संग निभानी (गीत)	इति शिवहरे	47
31.	मेरी आदर्श शिक्षक (कविता)	अवधेश कुमार श्रीवास्तव	48
32.	दो रचनाएँ (बरवै छन्दों में)	दिनेश उन्नावी	50
33.	पर्यावरण प्रदूषण (गीत)	डॉ कृष्ण कुमार मिश्र	52
34.	आभार (गीत)	डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'	54
35.	कुण्डली तो मिल गई है (गीत)	इति शिवहरे	55
36.	हिन्दी की व्यथा (गीत)	चित्राँशी चौधरी (छात्रा)	58
37.	वादा करके न आये	राघव निगम़	58
38.	तू सूरज बनकर जल (गीत)	ऋचा (छात्रा)	59
39.	जिनकी बदौलत (गजल)	मोहित वर्मा (छात्र)	60
40.	चाँद के पार (गीत)	विमल कवि	61
41.	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (गीत)	रचना अवस्थी (छात्रा)	62
42.	पिता (कविता)	अभिषेक अस्थाना	63
43.	हिन्दी दिवस (कविता)	आदर्श सिंह (छात्र)	63
44.	अपनी औकात में (कविता)	संध्या रावत (छात्रा)	64

राजबहादुर सिंह चन्देल
सभापति
प्रश्न एवं सन्दर्भ समिति

निर्देलीय समूह कार्यालय
विधान परिषद सचिवालय
फोन नं0 0522-2239790
आवास : 122 कृष्णानगर, उन्नाव
फोन नं0**0515-2970169**
मो0 नं0 94159905949

दिनांक : 25/09/2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि अभ्युदय सेवा संस्थान दिनांक ०७.१०.२०२३ को सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन करने जा रहा है और इस अवसर पर संस्था द्वारा वार्षिक पत्रिका के चुतर्थ अंक का भी प्रकाशन किया जा रहा है, निश्चय ही यह संस्था का एक स्तुत्य प्रयास है।

विश्वास है कि विमोचित पत्रिका अभ्युदय के चतुर्थ वार्षिकांक निश्चित रूप में सामाजिक सद्भाव की संरचना के लिए एक मार्गदर्शक के स्वरूप में अपनी अत्यधिक सामाजिक ग्राह्यता को न केवल सुनिश्चित करेगा अपितु वर्तमान समय में दिग्भ्रमित युवा पीढ़ी में भी सकारात्मकता के निर्माण हेतु संस्थान के पदाधिकारियों द्वारा वर्ष पर्यन्त चलने वाली सहपाठचगामी क्रियाकलापों का परिचय भी जनसाधारण को प्राप्त होगा ।

मैं पत्रिका के प्रकाशन पर अभ्युदय सेवा संस्थान परिवार को शुभमंगलमयी कामनाएं प्रेषित करता हूँ।

राजबहादुर सिंह चंदेल

(राजबहादुर सिंह चन्देल)

शकुन सिंह
अध्यक्ष
जिला पंचायत–उन्नाव

कार्यालय : जिला पंचायत, उन्नाव
दूरभाष : 0515–2820241
निवास : 31, हिरन नगर–उन्नाव
ग्राम : मुजाहिमपुर पोस्ट
मगरायर–उन्नाव
फोन : 9935009745, 6390170707

दिनांक : 18/09/2023

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्ता का विषय है कि जनपद- उन्नाव साहित्य की एक समृद्धि धरा है। साहित्य सृजन की इस पावन धरा पर अभ्युदय सेवा संस्थान अपनी बहुआयामी सृजनात्मक गतिविधियों के माध्यम से समाज के जरूरतमंदों की मदद कर रही है और उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का सराहनीय कार्य भी कर रही है।

संस्था द्वारा सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन तथा अभ्युदय पत्रिका के चतुर्थ अंक के विमोचन की हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएँ।

भवदीय

(शकुन सिंह)

डॉ. प्रभात सिन्हा
अध्यक्ष
अभ्युदय सेवा संस्थान,
कृष्णा नगर-उन्नाव

पंकज गुप्ता
विधायक–सदर

विधान सभा क्षेत्र–165, उन्नाव
निवास : 01, बाबूगंज–उन्नाव
मो.: 9838108077

दिनांक : 20/09/2023

शुभकामना संदेश

शिक्षा, सामाजिक और साहित्यिक गतिविधियों में अग्रणी अभ्युदय संस्था निरन्तर वंचितों के उत्थान के लिए प्रयासरत है। साहित्यिक क्षेत्र में अभ्युदय सेवा संस्थान के प्रयास नवांकुरों की प्रतिभा से जनपद, प्रदेश ही नहीं देश के बाहर भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। युवा गीतकार स्वयं श्रीवास्तव वैश्विक पटल पर उन्नाव का साहित्यिक परिचय बाखूबी करा चुके हैं जो साहित्य नगरी उन्नाव के लिए शुभ संकेत है। डॉ. प्रभात सिन्हा के नेतृत्व में संचालित अभ्युदय सेवा संस्थान द्वारा आयोजित सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवम् वार्षिक पत्रिका अभ्युदय के विमोचन की मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

पंकज गुप्ता
विधायक
165, सदर विधान सभा
उन्नाव

अपूर्वा दुबे
आई.ए.एस.
जिलाधिकारी–उन्नाव

अर्द्ध शा0 पत्र सं0 41/जिला. पत्रांक.
कार्यालय–जिलाधिकारी, उन्नाव (उ.प्र.)
फोन : 0515–2820207 (कार्यालय)
0515–2820201 (आवास)
फैक्स : 0515–2820400
ई–मेल : dmunn@nic.in

दिनांक : 20/09/2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि शिक्षा, सामाजिक और साहित्यिक गतिविधियों में अग्रणी अभ्युदय सेवा संस्थान निरन्तर जरूरतमंदों, वंचितों के उत्थान के लिये तत्पर है। साहित्यिक क्षेत्र में अभ्युदय संस्था नवांकुरों को तलाशने व उसमें निहित प्रतिभा को तराशने का कार्य भली भाँति कर रही है।

संस्था के द्वारा परिचित कराई गई प्रतिभाओं ने जनपद ही नहीं अपितु प्रदेश, देश व विदेश में भी उन्नाव का प्रतिनिधित्व किया है। जो निश्चय ही गर्व का विषय है। संस्था द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं वार्षिक पत्रिका अभ्युदय के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर मेरी ओर से अनन्त शुभकामनाएँ।

भवदीय

(अपूर्वा दुबे)
जिलाधिकारी, उन्नाव।

डॉ. प्रभात सिन्हा
अध्यक्ष
अभ्युदय सेवा संस्थान,
कृष्णा नगर-उन्नाव

स्वच्छ उन्नाव

सुन्दर उन्नाव

श्वेता मिश्रा

अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद–उन्नाव

कार्यालय :
नगर पालिका परिषद, उन्नाव
मो.: 9919692804

दिनांक : 19/09/2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि उन्नाव की प्रख्यात अभ्युदय सेवा संस्थान द्वारा अपनी स्मारिका 'अभ्युदय', के चतुर्थ अंक का प्रकाशन माह अक्टूबर, २०२३ के प्रथम सप्ताह में ही किया जाना है। यह परम पुनीत कार्य है। स्मारिका के तीन अंक मेरे पास पहले से ही हैं। 'अभ्युदय' में संग्रहीत सामग्री अति ज्ञानवर्धक व नैतिक संदेशों से परिपूर्ण रहती है। प्रकाशन के लिये मैं संस्थान के पदाधिकारियों व सदस्यों को हार्दिक साधुवाद देती हूँ।

भवदीय

(श्वेता मिश्रा)

डॉ. प्रभात सिन्हा
अध्यक्ष
अभ्युदय सेवा संस्थान,
कृष्णा नगर-उन्नाव

स्वच्छ गंगाघाट

सुन्दर गंगाघाट

कौमुदी पाण्डेय

अध्यक्ष

नगर पालिका परिषद–गंगाघाट, उन्नाव

कार्यालय :

नगर पालिका परिषद, गंगाघाट, उन्नाव

मो.: 9495511524

दिनांक : 22/09/2023

शुभकामना संदेश

अभ्युदय सेवा संस्थान के सभी कर्मठ- सम्मानित सदस्यों को हमारी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ। जनपद उन्नाव की साहित्यिक धरा में काव्य की सरस धारा को प्रवाहित करते रहने के लिये बहुत बहुत बधाई।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं पत्रिका विमोचन के लिये शुभकामनाएँ।

भवदीय

(कौमुदी पाण्डेय)

डॉ. प्रभात सिन्हा

अध्यक्ष

अभ्युदय सेवा संस्थान,

कृष्णा नगर-उन्नाव

आशुतोष शुक्ल
विधायक–भगवन्त नगर

कार्यालय :
'परिमल वाटिका'
सिकन्दरपुर कर्ण–उन्नाव

दिनांक : 20 सितम्बर, 2023

शुभकामना संदेश

यह जानकर अतीव प्रसन्नता हो रही है कि साहित्य नगरी उन्नाव में साहित्यिक पताका को ऊँचा रखने में अभ्युदय सेवा संस्थान अपने सार्थक प्रयास कर रहा है। जोकि अत्यन्त सराहनीय है। सामाजिक व शैक्षिक क्षेत्र में भी अग्रणी यह संस्था निश्चित ही जनपद के उत्थान के लिये शुभ संकेत है।

सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन उद्गार' एवं चतुर्थ वार्षिक पत्रिका अभ्युदय के प्रकाशन की शुभकामनाएं।

भवदीय
(आशुतोष शुक्ल)

डॉ. प्रभात सिन्हा
अध्यक्ष
अभ्युदय सेवा संस्थान,
कृष्णा नगर-उन्नाव

वाणी वन्दना

उजेरे ते सब जगु भरि उठै

करौ माँ बानी दया विशेष।
न राखौ कहूँ अँधेरिया शेष ।।
तार माँ बीना के झनकारि।
करौ दिल महुँ सबके उजियारि।।

दिया नैतिकता का बरि उठै।
उजेरे ते सब जगु भरि उठै।।
बेलि बेइमानी कै मुरझाय।
पउध ईमानै कै गउझ्याय।।

अगिनि इर्षा कै जाय बुझाय।
राह दे अइसी माय सुझाय।।
भाव एका का ठँसि भरि जाय।
द्वैष के खार-झाँड़ बरि जायं।।

न होवै धरमन बिच तकरार।
बढ़ैं ना नफरत केरि दरार।
प्यार ते सब जन हिलि-मिलि रहैं।
फूल ज्यों बगिया मा खिलि रहैं।।

मसीहा जनता जिनका चुनै।
दरद वोऊ जन-जन का सुनैं।।
देश हित सब हों जिम्मेदार।
करैं मनईं-मनईं ते प्यार।।

भाव समता का नित गहराय।
समुद्दुरु प्रेमै का लहराय।।
तिरंगा फहर-फहर फहराय।
विश्वगुरु म्वार देशु कहलाय।।

- दिनेश उन्नावी

सम्पादक की कलम से.....

सेवा मानव धर्म है, सेवा है शुचि भाव।
अस्तु हृदय में हम रखें, सेवा के प्रति चाव।।

हम मनुष्य हैं। हमें विधाता ने सुविकिसित व संवेदनशील मस्तिष्क दिया है। अतः हमारा कर्तव्य बनता है कि हम प्राणिमात्र के प्रति हृदय में संवेदना रखें, विशेषकर मनुष्य जाति के प्रति। दीन–हीन, अपंग व साधन विहीन लोगों के लिए हम सेवा और सहानुभूति के भाव को जागृत रखें। सेवा व्यक्तिगत स्तर पर भी हो सकती है और संगठन बनाकर भी। संघ के रूप में सेवा वृहद स्तर पर संभव हो पाती है।

हम उन्नाववासियों के लिए सौभाग्य की बात है कि यहाँ अभ्युदय सेवा संस्थान का गठन विगत लगभग 8 वर्ष पूर्व हुआ था। अपने गठन के समय से ही यह संस्थान मानव सेवा में पूरी निष्ठा से रत है। संस्था के सदस्य निर्धन बस्तियों में जाकर वहाँ के बच्चों को खिलौने, पेंसिल, कॉपियाँ, पेन, रबर आदि का वितरण करते हैं, जिससे उन बच्चों के मलिन चेहरों पर मुस्कान प्रस्फुटित हो उठती है। संस्था इन बस्तियों में जाड़े में कम्बल, स्वैटर, कोट, जाकेट व जूते–मोजे आदि का वितरण करती है। दूर–दराज गाँवों के मजदूरों व भट्ठा मजदूरों की भी आर्थिक मदद संस्था के माध्यम से हो पाती है।

भीषण गर्मी में बेजुबान आवारा पशुओं के लिए पानी उपलब्ध कराने हेतु मोहल्ले–मोहल्ले पानी की नाँदें न केवल रखवा दी जाती हैं, अपितु उनमें पानी भरवाने की उचित व्यवस्था भी संस्था द्वारा सुनिश्चित की जाती है जो कि वास्तव में एक पुनीत कार्य है। आज के प्रदूषण के युग में संस्था लोगों को निःशुल्क पौधे उपलब्ध कराकर उन्हें आरोपित करने को जनमानस को प्रेरित भी करती है ताकि हरीतिमा निरन्तर बढ़ती रहे और ऑक्सीजन लोगों को उपलब्ध होती रहे। उपरोक्त वर्णित कार्यों के अलावा भी अन्य जनहितकारी कार्य संस्था द्वारा सम्पादित किए जाते हैं, जिनका साक्षी मैं स्वयं भी हूँ।

अभ्युदय सेवा संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष अखिल भारतीय स्तर के कवि सम्मेलन का पुनीत आयोजन भी किया जाता है। इससे हम लोगों का स्वस्थ्य मनोरंजन तो होता ही है साथ में ही साहित्यिक ज्ञान में भी अभिवृद्धि होती है। इसके अलावा प्रत्येक वर्ष युवा कवियों के उत्साहवर्धन व प्रोत्साहन स्वरूप युवा कवि सम्मेलन का भी आयोजन संस्था 25 दिसम्बर को करती है। इस मंच से नवांकुरों को भी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करने का सुयोग मिलता है। संस्था के इस आयोजन की भी मैं खुले हृदय से प्रशंसा करता हूँ।

इस सेवा संस्थान द्वारा विगत 4 वर्षों से अभ्युदय स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है। इस वार्षिक पत्रिका में सन्निहित सामग्री न केवल पठनीय अपितु स्मरणीय भी होती है। सम्पादन दायित्व से जुड़े होने के कारण मुझे एक–एक शब्द को पूरे मनोयोग से पढ़ने का सुयोग प्राप्त होता है। अस्तु मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि इसकी पाठ्य सामग्री वाकई पठनीय होती है। यह स्मारिका/वार्षिक पत्रिका का चतुर्थ अंक है। इसकी भी पाठ्य सामग्री निश्चय ही ज्ञानवर्धक व जनहितकारी है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संस्थान के सदस्यों को हार्दिक साधुवाद! संस्था उत्तरोत्तर अपने प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, इसी शुभकामना के साथ आपका.....

– दिनेश उन्नावी
पूर्व प्रवक्ता अंग्रेजी
एस.पी.पी. इण्टर कालेज, पड़री कलॉ, उन्नाव
चलभाष : 9236846641

निवास :
A-402, आवास विकास कॉलोनी
उन्नाव–209801

संरक्षक की कलम से.....

आज जनपद उन्नाव का पुराना अंकुर एक वट वृक्ष की तरह खड़ा है। पूरे प्रांत में क्रिया कलापों की चर्चा किसी न किसी माध्यम से हो रही है। यह सब आपके स्नेह एवं सहयोग का प्रतिफल है। पूरा का पूरा अभ्युदय सेवा संस्थान आपके द्वारा दिये जा रहे सम्बल को प्रणाम निवेदित करता है।

आज के आर्थिक दौर एवं भागमभाग के समय में साहित्य, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सेवा का विचार और क्रियान्वयन दुरूह कार्य है। अभ्युदय सेवा संस्थान ने आप सबके सहयोग से जो बीड़ा वर्षों पूर्व उठाया था वह गतिमान है और उत्तरोत्तर आपसे प्रमाण–पत्र ले रहा है।

हमारी सेवायें चाहे जेल जाकर महिला बन्दियों व बच्चों को वस्त्रादि का वितरण हो, वृक्षारोपण हो, वंचित वर्गों में ईंट भट्ठों पर जाकर वस्त्र या भोजन वितरण, पशुओं की सेवा हो, गाँवों में शिक्षा के प्रोत्साहन के कार्य हों चिकित्सकीय कैम्प हों, गर्मियों में प्याऊ की व्यवस्था हो, सब सम्पूर्ण समाज द्वारा सराहा जा रहा है। इसके लिये हम जनमानस के ऋणी हैं। महापुरूषों या मार्गदर्शकों के जन्मोत्सव मनाकर हम ऊर्जा लेने का प्रयास करते है। विभिन्न वर्गों के लोग सम्मिलित होते हैं। वह समरस्ता का प्रतीक है। हम आपको भी निमन्त्रण देते हैं कि आप हमारे साथ आइये और हमारा सम्बल बढ़ाने के साथ अभ्युदय सेवा संस्थान के माध्यम से साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों के भागी बनकर राष्ट्रोत्थान में योगदान करिये।

अभ्युदय सेवा संस्थान के वार्षिकोत्सव पर आप सबका स्वागत, अभिनन्दन एवं वन्दन। संस्था के सभी सदस्यों को बधाई। सम्मिलित प्रयास का परिणाम दिख रहा है। संस्था के अध्यक्ष डॉ. प्रभात सिन्हा की सराहना निजी हित कहलायेगा क्योंकि वह बने ही सेवा के लिये है। महामंत्री श्री ओ.पी. तिवारी, अनुज अनिरूद्ध की मेहनत और दायित्व निर्वाहन की सोच हम सबको सम्बल देती है। अभ्युदय से उदित 'स्वयं' आज देश का बड़ा नाम है। काव्य के क्षेत्र में जो परचम उन्होंने लहराया है वह संस्थान का भी सौभाग्य है।

बड़े–बड़े साहित्यिक आयोजनों की कड़ी में आज समारोह के साथ पत्रिका का भी विमोचन है। हमारे मंच पर अनिरुद्ध जैसे व्यक्ति द्वारा संचालन किया जाता है तो कार्यक्रम की गरिमा के साथ–साथ ऊर्जा का बहाव तेज हो जाता है। बड़ों का सम्मान (किसी भी क्षेत्र में हो) छोटो का मान अभ्युदय सेवा संस्थान की परम्परा रही है, हम आज भी कर रहे हैं।

अन्त में संस्था के सभी सदस्यों, सम्पादक मण्डल, विज्ञापनदाताओं, लेखको एवं पत्रकारों के प्रति आभार व्यक्त करते हुआ, धन्यवाद प्रेषित करता हूँ। आपका सुझाव हमारे लिये स्वागत योग्य है।

साभार!

निवास :
निकट कल्याणी देवी मन्दिर
सिविल लाइन्स, उन्नाव

– प्रोफेसर मनोज श्रीवास्तव
संरक्षक
अभ्युदय सेवा संस्थान

अध्यक्ष की कलम से.....

अभ्युदय सेवा संस्थान का गठन जिन उद्देश्यों को लेकर किया गया था वो संस्था के साथियों के प्रयासों व आप सभी के स्नेहिल सहयोग के चलते फलीभूत हो रहे हैं। सच मानिए तो यह आप सबका सहयोग रूपी संबल ही है जो संस्था को नित नई इबारत लिखने में सहायक है।

साहित्यिक मंच के माध्यम से अब तक अभ्युदय सेवा संस्थान द्वारा सात विराट काव्य गोष्ठियों का आयोजन कराया गया। जिसमें 25 दिसम्बर 2023 की गोष्ठी में बयालिस कवियों ने प्रतिभाग किया जो अब तक की गोष्ठियों में सफलतम गोष्ठी, नवांकुरों के प्रतिभाग की दृष्टि से कही जा सकती है। इस काव्य गोष्ठी में इण्टर कॉलेजों में पढ़ने वाली साहित्यधर्मी 5 नई कोपलों ने प्रतिभाग किया। अभ्युदय सेवा संस्थान के अस्तित्व में आने से पूर्व साहित्य नगरी उन्नाव में यदि गत दस वर्षो पर नजर डालें तो हम पाएंगे कि कोई भी नया स्वर मंचों तक काव्य पाठ करने नहीं पहुँच पाया। इसके बाद भी साहित्यिक मंचों से कहा जाता रहा– साहित्य की उर्वरा धरती उन्नाव। लेकिन यह विचारणीय विषय था कि इस उर्वरा धरती पर नवांकुर मंचों तक नहीं पहुँचे या यूँ कहें कि नवांकुर सिर्फ अच्छे श्रोता के रूप में अच्छे माने जाते थे। यह अभ्युदय की ही सार्थक पहल है कि आज जनपद में होने वाले काव्य समारोहों में बमुश्किल ही कोई युवा प्रतिभाओं को नजर अंदाज कर पाए। आप सबके द्वारा अभ्युदय के मंचों से काव्य पाठ करने वाले नवांकुरों को आपने दूना स्नेह प्रदान कर संबलित किया है। आज युवा साहित्यकारों द्वारा देश– प्रदेश में कई जगह उन्नाव का प्रतिनिधित्व सफलता पूर्वक किया जा रहा है। अभ्युदय साहित्य के क्षेत्र में छिपी प्रतिभाओं को ढूँढ़कर निकालता व निखारता आ रहा है। इसी के साथ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपने श्रेष्ठ योगदान से समाज को दिशा देने वाली विभूतियों को भी संस्था अपने मंच से सम्मानित करती है। षष्टम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के सफल आयोजन के बाद, अभ्युदय का सप्तम अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन होने जा रहा है, जिसमें अभ्युदय वार्षिक पत्रिका (चतुर्थ अंक) का विमोचन भी किया जाना है।

साहित्यिक गतिविधियों के साथ–साथ अभ्युदय सेवा संस्थान द्वारा संचालित मुस्कान घर के माध्यम से ग्रामीण अंचलों के आँगनवाड़ी, प्राथमिक एवं जूनियर स्तर के विद्यालयों में बच्चों को कॉपी, किताबें, पेन, पेन्सिल, रबर, कटर के साथ ही बच्चों को खेलने हेतु बैट, बॉल, कैरम, लूडो आदि भेंट कर शिक्षा व विद्यालय के प्रति अच्छी सोच विकसित कर, विद्यालय आने को प्रेरित कर शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ाते हैं। इसके बाद जहाँ गर्मियों में बेजुबान पशुओं के लिए नगर व आसपास को क्षेत्र में संस्था नाँदे रखवा कर उनमें जल भरने के संकल्प के साथ लोगों को भेंट करती चली आ रही हैं। वहीं सर्दियों में पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों, बड़ों व बुजुर्गो को संस्था उनके द्वार जा–जाकर ऊनी वस्त्र कम्बल, जैकेट, कोट, आदि भेंट करने के साथ ही ईंट भट्टों पर जीवन यापन कर रहे परिवारों को भी ऊनी वस्त्र, जैकेट, कोट, कम्बल आदि के साथ–साथ टॉफी, बिस्कुट, चिप्स, चॉकलेट आदि वितरित करती है। इन उदास चेहरों पर विजित मुस्कान देख मन खुशियों से भीग जाता है जिसे शब्दों में वर्णित करना आसान न होगा।

संस्था बाल दिवस, दीपावली, होली आदि प्रमुख अवसरों पर जिला कारागार जाकर वहाँ महिला बंदियों के संग रह रहे 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों को मोजे, टोपे ऊनी वस्त्र, स्वेटर, खिलौने, टॉफी, बिस्कुट, चिप्स आदि भेंटकर मुस्कान लाने का कार्य करती चली आ रही है। संस्था पर्यावरण के क्षेत्र में भी बच्चों के साथ मिलकर पौधे रोपित करते हुए बच्चों को पर्यावरण व वृक्षों का हमारे जीवन में महत्व व लाभ बताते हुये पौधरोपण के लिए प्रेरित करती चली आ रही है। अभ्युदय सेवा संस्थान द्वारा संचालित कोंपल क्लब के माध्यम से पर्यावरण संबंधी चर्चा बच्चों से करते हुए पौधरोपित करा उसे संरक्षित रखने का संकल्प लेते हैं। अस्तु ईश्वर से प्रार्थना है कि हमारा समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का भाव बना रहे.....

मैं तृषित बादलों की हूँ अर्न्तव्यथा, मत मुझे मरुस्थलों का पता दीजिये।
है सहारा वही जो सहारा बने, मेरे चिन्तन को भी एक दिशा दीजिये।।

– डॉ. प्रभात सिन्हा
संस्थापक अध्यक्ष
अभ्युदय सेवा संस्थान, उन्नाव

अभ्युदय आज तक

''नव सृजन के हम चितेरे'' को ध्येय वाक्य मानकर शिक्षा, संस्कृति, पर्यावरण एवं साहित्य के क्षेत्र में निरन्तर कार्य करने वाले अभ्युदय सेवा संस्थान को स्थापित हुए यह आठवां वर्ष है। लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया। यही है अभ्युदय के उद्भव से आज तक के सफर की दास्ताँ.....

प्रस्तुत है वर्ष 2022–23 के अभ्युदय द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला का तिथि वार विवरण आपके अवलोकनार्थ–

• वर्ष 2022 में आयोजित जयघोष कवि सम्मेलन में देश के मूर्धन्य कवियों के काव्य पाठ से साहित्य प्रेमियों को रसासिक्त होने का अवसर मिला। युवा कवि राम भदावर जी को संस्थान के सर्वोच्च सम्मान से अलंकृत किया गया।

• 16 व 30 अक्टूबर 2022 को संस्था द्वारा वस्त्र एकत्रीकरण कैम्प लगाकर जरूरतमंदों के लिए वस्त्र एकत्रित किये गये।

• 6 नवम्बर 2022 को इनरव्हील क्लब द्वारा अभ्युदय सेवा संस्थान के मुस्कान घर के माध्यम से शिक्षण सामग्री खिलौने एवं कम्बल वितरण किया गया।

• 13 नवम्बर 2022 को जिला कारागार में महिला बन्दियों के संग रह रहे बच्चों को पाठ्य सामग्री, खेल सामग्री आदि भेंट की गई।

• 26 नवम्बर 2022 को प्राथमिक विद्यालय थाना–द्वितीय में पाठ्य सामग्री, खेल सामग्री एवं टॉफी, चाकलेट आदि वितरित किया गया। इसी नवम्बर माह में जनपद के बौनामऊ, थाना, पहलीखेड़ा, शुक्लागंज, अचलगंज स्थित ईंट भट्ठों एवं बस्तियों में वस्त्र वितरण किया गया।

• 25 दिसम्बर 2022 को विराट काव्य गोष्ठी उद्गार शीर्षक से आयोजित की गई जिसमें लगभग आधा सैकड़ा कवियों ने प्रतिभाग किया।

• 31 दिसम्बर 2022 को रेलवे स्टेशन एवं बस स्टाप पर निःशुल्क चाय वितरण का कार्यक्रम किया गया।

• 2 जनवरी 2023 को बढ़ती ठंड को देखते हुये मेगा वस्त्र वितरण कैम्प का आयोजन किया गया।

• 12 जनवरी 2023 को विवेकानन्द जयंती पर संस्था के द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें संस्था के वक्ताओं के द्वारा राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका विषय पर विचार व्यक्त किये गये।

• 14 जनवरी 2023 को वस्त्र वितरण का मेगा कैम्प लगाकर लगभग 200 जरूरतमंद लोगों को तन ढकने के लिये वस्त्र संस्था द्वारा उपलब्ध कराये गये।

• 04 फरवरी 2023 को निःशुल्क नेत्र जाँच एवं ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 78 लोग लाभान्वित हुये।

• 14 अप्रैल 2023 से 15 जून 2023 तक बेजुबान पशुओं की प्यास बुझाने हेतु अभ्युदय सेवा संस्थान के द्वारा 1 सैकड़ा से अधिक नाँदों का वितरण किया गया।

• 28 अप्रैल 2023 को संस्था के संरक्षक आर0बी0 माथुर जी की स्मृति में प्राथमिक विद्यालय थाना–प्रथम में स्टेशनरी, खिलौने एवं बैग का वितरण कर नौनिहालों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ाने का प्रयास किया गया।

• 18 जून 2023 को काव्य पंचामृतम् शीर्षक से एक कवि सम्मेलन का आयोजन संस्था के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में किया गया। जिसमें जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परचम लहराने वाले युवाओं का एवं वरिष्ठजनों का भी सम्मान किया गया।

• 22 जुलाई 2023 को प्राथमिक विद्यालय पठकापुर में पाठ्य सामग्री एवं खेल सामग्री वितरित की गई।

दिनांक 07 अक्टूबर 2023 को संस्था का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन प्रस्तावित है।

अभ्युदय सेवा संस्थान का सेवा स्यंदन आप सभी के सहयोग से द्रुतगति से आगे बढ़ रहा है। समाज सेवा, साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में निरन्तर नव प्रतिमान गढ़ने को हम सभी दृढ़ संकल्पित हैं। सफर निरन्तर जारी है.....

– अनिरूद्ध सौरभ
सचिव
अभ्युदय सेवा संस्थान, उन्नाव

अभ्युदय संस्था द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अद्यतन सम्मानित विभूतियाँ

2017-18

- श्री शिव बालक राम 'सरोज' – शिक्षा
- श्री आर.पी. वर्मा 'सरस' – साहित्य
- डॉ. आशीष श्रीवास्तव – चिकित्सा
- श्री प्रेम कुमार सिंह – समाज सेवा
- श्री ओ.पी. तिवारी – विधिक सेवा
- श्री जी.एस. भदौरिया – राष्ट्र सेवा
- श्री आशुतोष त्रिपाठी – युवा व्यवसायी

2018-19

- प्रो. वी.एन. सिन्हा – शिक्षा
- श्री नसीर अहमद – कविता
- श्री जयकृष्ण पाण्डेय 'कोविद' – साहित्य
- डॉ. ए.के. निगम – चिकित्सा
- श्री अखिलेश अवस्थी – समाजसेवा
- श्री कर्ण बहादुर सिंह – विधिक सेवा
- श्री गौरीशंकर व ऋषिकेश वणिक – आदर्श पुत्र सम्मान
- श्री पी.के. तिवारी – राष्ट्र सेवा सम्मान
- श्री देवांशी दीक्षित – प्रतिभा सम्मान
- श्री उमा निवास बाजपेयी – दशरथ मांझी
- श्री भरत कुमार – जिला युवा सम्मान
- श्री आनन्द शर्मा – खेल एथिलीट
- श्री प्रवीण मिश्रा 'भानू' – पं. दीन दयाल उपाध्याय

2019-20

- डॉ. सुमन लता जायसवाल – शिक्षा
- श्री अमूल्य शुक्ल – साहित्य
- बहन यी.के. कुसुम – पर्यावरण
- शहीद शशिकांत तिवारी – राष्ट्र सेवा
- श्रीमती गौसिया खॉन – समाज सेवा
- डॉ. सुरेन्द्र मिश्र – चिकित्सा
- श्री महेन्द्र सिंह 'टीटू' – विधिक सेवा
- श्री विजय लक्ष्मी – प्रतिभा
- श्री नीरज श्रीवास्तव – युवा व्यवसायी

2020-21

- श्री रोहित यादव – शिक्षा
- श्री दिनेश उन्नावी – साहित्य
- इंजी. निकुंज बाजपेयी – पर्यावरण मित्र
- श्री उमाशंकर दीक्षित – समाज सेवा
- श्री आशीष सिंह 'भूखा टीम' – युवा समाज सेव
- डॉ. अतिरेक द्विवेदी – चिकित्सा सेवा
- श्री विनोद त्रिपाठी – विधिक सेवा
- अपूर्वा पाण्डेय – प्रतिभा सम्मान
- श्री अनूप कुशवाहा – अभ्युदय गौरव
- श्री संतोष बाथम – अभ्युदय गौरव
- प्रतिभा भारती – खेल सम्मान
- शुभम् चौधरी – सृजन सम्मान

2021-22

- श्रीमती पुष्पा यादव – शिक्षा
- श्री सुरेश फक्कड़ – साहित्य
- श्री राकेश द्विवेदी – राष्ट्र सेवा
- श्री गौरांग श्रीवास्तव – समाज सेवा
- श्री अशोक द्विवेदी – न्याय श्री
- श्री सोनू बाजपेयी – युवा उद्यमी
- डॉ. एस.के. वर्मा – चिकित्सा सेवा
- श्री हरीश चन्द्र शुक्ल – विधिक सेवा
- श्री ऋषभ श्रीवास्तव – अभ्युदय गौरव
- श्री राहुल वर्मा – अभ्युदय गौरव
- सुश्री श्रद्धा बाजपेयी – अभ्युदय गौरव

2022-23

- श्री अजब सिंह यादव - शिक्षा
- श्री कमलेश अवस्थी - शिक्षा
- श्री मोहनलाल मिश्र 'धीरज' - साहित्य
- श्री बृजेश शुक्ला - राष्ट्र सेवा
- श्री मनीष सिंह सेंगर - समाज सेवा
- डॉ. अविनाश सिंह - चिकित्सा
- वसीम खॉन - विधिक सेवा
- श्री आकाश अंकुर ओमर - उद्यम
- श्री लक्ष्य निगम - कला
- श्री गौरवी निगम - युवा सम्मान
- श्री स्वयं श्रीवास्तव - अभ्युदय गौरव
- श्री प्रेम सिंह सेंगर - अभ्युदय गौरव
- श्री गिरीश शुक्ला - अभ्युदय गौरव
- श्री सुधीर तिवारी - अभ्युदय गौरव

प्रसंगहीनता के दौर में साहित्य

– डॉ. यतीन्द्र सिंह कुशवाहा

आज के दौर में किसी साहित्यकार, विचारक अथवा सामान्य व्यक्ति के वक्तव्य पर विवाद या बहस की स्थिति उत्पन्न हो जाना सामान्य सी घटना है। इसी क्रम में तुलसीदास कृत रामचरित मानस पर भी चर्चा प्रारम्भ हुई जिसने समय के साथ विवाद का रूप लेना प्रारंभ कर दिया। इस चर्चा में दो शब्दों पर सर्वाधिक मत व्यक्त किये गये, वे शब्द थे– ब्राह्मण एवं शूद्र। आज का दौर साहित्य की गरिमा, उसके शील आदि पर ध्यान नहीं देता है। यही कारण है कि साहित्य प्रसंगहीनता की समस्या का सामना कर रहा है।

प्रथम– किसी भी कवि अथवा लेखक का अध्ययन करते समय या उद्धृत करते समय साहित्यिक आवश्यकताओं का ध्यान रखना अनिवार्य है। किसी कवि या लेखक द्वारा रचित/लिखित साहित्य की पृष्ठभूमि के ज्ञान बिना उसकी व्याख्या करने पर वास्तविक अर्थ की प्राप्ति संभव नहीं होती है। किसी कवि/लेखक का अध्ययन करते समय कवि तथा लेखक के व्यक्तिगत अवचेतन में पूर्वाग्रह रख सकता है। यह पूर्वाग्रह अनुकूल घटना अथवा प्रसंग में प्रकट हो सकते हैं किन्तु इसका परीक्षण करना भी आवश्यक है और यह परीक्षण जीवन का ज्ञान प्रथम आवश्यकता है, क्योंकि सामान्य व्यक्ति अपने चेतन अथवा कवि/लेखक के द्वारा रचित/लिखित सम्पूर्ण साहित्य के अध्ययन से ही संभव है। इस परीक्षण में यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि किसी वर्ग विशेष के प्रतिनिधि के प्रति यह भाव उस कवि/लेखक के साहित्य में लगभग प्रत्येक स्थान पर समान है न कि घटना अथवा प्रसंग के अनुसार।

द्वितीय– कवि अथवा लेखक की दार्शनिक विचारधारा, उसके प्रति उसका दृष्टिकोण तथा उसके साहित्य में उस विचारधारा का क्रमिक विकास। का अध्ययन अनिवार्य हो जाता है क्योंकि कवि अथवा लेखक की विचारधारा तथा दर्शन में परिवर्तन हो जाता है। यथा– कबीर साधनात्मक रहस्यवाद से भावात्मक रहस्यवाद की ओर अग्रसर होते हैं तो पंत अपनी काव्ययात्रा में चार दार्शनिक पड़ावों तक विचरण करते हैं। दार्शनिक विचारधारा तथा अध्ययन की पृष्ठभूमि संयुक्त रूप से प्रभावित करती है। तुलसी राम के भक्त ही नहीं हैं अपितु शास्त्रों के ज्ञाता भी हैं। अतः उनके द्वारा रचित साहित्य की व्याख्या बिना शास्त्रीय ग्रन्थों का आधार लिये करना न तो उचित है और न ही तर्कसम्मत।

तृतीय– परिस्थितियाँ/देशकाल व्याख्या के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारकों में से एक हैं। देशकाल/परिस्थितियों को भी तीन भागों में समझना आवश्यक है– प्रथम– कथानक कालीन परिस्थितियाँ, द्वितीय– रचनाकालीन परिस्थितियाँ, तृतीय– पाठनकालीन परिस्थितियाँ। किसी भी रचना में कथानक के समय की परिस्थितियाँ/देशकाल वातावरण का प्रयोग न हो तो वह न तो पाठक का साधारणीकरण कराने में सक्षम होगी तथा न ही घटनाओं की व्याख्या करने में। इसी प्रकार कथानक की घटनाओं में तथ्यात्मक संशोधन संभव नहीं होता है किन्तु उसकी अभिव्यक्ति कवि/लेखक पर निर्भर करती है, वह अभिव्यक्ति में काल्पनिकता का आश्रय ले सकता है। वह इस अभिव्यक्ति को रचना करते समय की परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना रचना नहीं कर सकता है। श्रीराम की वेशाभूषा का वर्णन जैसा भौतिक विवरण अथवा किसी घटना को देखने की दृष्टि हेतु प्रयुक्त संवाद, उसकी भाषा–शैली आदि रचनाकालीन परिस्थितियों तथा कवि की प्रतिभा पर ही निर्भर करते हैं।

किसी कृति अथवा कृति के अंश की व्याख्या में पाठनकालीन परिस्थितियों की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इन परिस्थतियों का सर्वाधिक प्रभाव भाषा पर पड़ता है क्योंकि 'भाषा मानव उच्चारणावयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार–विनिमय करते हैं, लेखक, कवि या वक्ता रूप में अपने अनुभवों एवं भावों आदि को व्यक्त करते हैं।' (भाषा, विज्ञान, भोलेनाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद, 1999 पृ.सं. 05) इस परिभाषा के सर्वाधिक ध्यान देने योग्य शब्द है– यादृच्छिक अर्थात् इच्छा के अनुसार शब्द का अर्थ है। इसका कोई तार्किक सम्बन्ध नही ं है। यदि पुस्तक को कलम तथा कलम को पुस्तक कहा जा रहा होता तो सभी उसका प्रयागे कर रहे होते। अतः भाषा के बहुत से शब्द अपने शास्त्रीय अर्थों को समय के साथ खो देते हैं तथा उनकी व्यापक अवधारणा की चर्चा लगभग समाप्त हो जाती हैं। वे शब्द रूढ़ अर्थों में प्रयागे किये जाने लगते हैं। यदि किसी विषय पर विवाद की स्थिति उत्पन्न होती है तो व्यापक अर्थ की खोज आवश्यक हो जाती है किन्तु उपर्युक्त तीनों परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए।

इसके अतिरिक्त एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारक का भी सन्दर्भ लेना आवश्यक है कि कृति की विधा प्रबन्धकाव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि में से कौन सी है क्योंकि प्रसंग व्याख्या अथवा अर्थ की निष्पत्ति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है। प्रसंग में मात्र घटना विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि घटना के साथ पात्र का चरित्र भी जानना अनिवार्य है। कृति में पात्रों का वर्गीकरण होता है

जिसमें सद्पात्र तथा खल पात्र दोनों की व्यवस्था होती है। यदि खल पात्र के मुख से सूक्ति वाक्य कवि द्वारा कहलवाया जाता है तो इसे कवि की मान्यता अथवा उसके द्वारा समर्थित कहा जाना अनुचित है क्योंकि अनेक अवसर पर कथानक को उच्चता प्रदान करने हेतु अथवा सद्पात्र की चारित्रिक विशेषताओं को प्रकट करने हेतु भी इस प्रकार संवाद प्रयोग किया जाता है। संभव है कि मानस पर टिप्पणी करने वाले अनेक विद्वानों को अपने वक्तव्य में प्रयोग करने वाली सूक्तियों के प्रसंग तथा कथानक में उस सूक्ति को बोलने वाले पात्र की जानकारी न हो। अतः किसी भी महान ग्रन्थ पर टिप्पणी के पूर्व इन महत्त्वपूर्ण विषयों पर जानकारी आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य है।

भक्तिकालीन साहित्य में शब्द शक्ति का भी बड़ा महत्त्व है। अतः मानस की चौपाइयों के अर्थ या व्याख्या के चरण में अभिधा, लक्षणा तथा व्यजंना का प्रयोग समझना भी आवश्यक है। तुलसी के काव्य में लक्षणा का सशक्त प्रयोग है जिसे प्रत्येक प्रसंग में ध्यान रखने की आवश्यकता भी है।

अतः तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस की पंक्तियों की व्याख्या एवं विश्लेषण करते समय तुलसी के दर्शन, विचारधारा, जीवन, कथानककालीन परिस्थितियों, रचनाकालीन परिस्थितियों, पाठनकालीन परिस्थितियों, भाषिक विकास एवं विधागत वैशिष्ट्य यथा– पात्र योजना, चरित्र योजना का अध्ययन आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त रामचरित मानस अथवा किसी भी ग्रन्थ की किसी भी चौपाई या पद का अर्थ समझने के लिए उसके पूर्वापर सम्बन्ध अर्थात् उसके आगे तथा पीछे की चौपाई को विश्लेषित करना आवश्यक है।

वर्तमान में रामचरित मानस की निम्नांकित चौपाई पर अधिकांश व्यक्ति विद्वान तथा विशेषज्ञ की भाँति अपनी–अपनी व्याख्या देने में व्यस्त हैं –

सापत ताड़त परुष कहंता। बिप्र पूज्य अस गावहिं संता।।
पूजिअ बिप्र सील गुन हीना। सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना।।

(रामचरित मानस 3/34/1–2)

यह चौपाई रामरचित मानस के अरण्ड कांड में कबंध–उद्धार प्रसंग में उद्धृत की गयी है। कबंध श्रीराम को अपनी दुर्दशा का कारण महर्षि दुर्वासा द्वारा दिया श्राप बताता है। तब श्रीराम द्वारा उससे यह कथनः कहा गया था। इन पंक्तियों का शाब्दिक अर्थ है श्राप देता हुआ, ताड़ना करता हुआ (ताड़ना शब्द का अर्थ यहाँ भी पिटाई करना अथवा दण्ड देना नहीं है अपितु देखने या दृष्टि रखने से है, इसकी स्पष्टता अगले शब्दों परूष कहंता अर्थात् कठोर वचन कहता हुआ से भी होता है क्योंकि कोई गलत कार्य करता देखने पर ही कठोर वचन कहने का प्रसंग आता है)। कठोर वचन कहता हुआ भी दुर्वासा जी जैसा विप्र पूजनीय है। यहाँ यह ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि श्रीराम जी द्वारा कथानक के इस प्रसंग में दुर्वासा जी के संदर्भ में की जा रही है।

यदि इस चौपाई की व्याख्या अथवा विश्लेषण प्रसंग के पात्रों के अनुसार न करके सूक्ति के रूप में की जाये तो विप्र तथा शूद्र शब्द के मात्र रूढ़ अर्थों को लेना एक बड़ी भूल होगी क्योंकि सूक्ति का अर्थ ग्रहण करते समय उसके शब्दों तथा पद की व्याख्या शास्त्रीय अर्थों को संज्ञान में लिये बिना करना एक बड़ी भूल होगी। अतः विप्र तथा शूद्र , शब्दों का शास्त्रीय अर्थ ग्रहण करके ही तुलसीदास जैसे समन्वयवादी तथा विद्वान व्यक्ति के पदों के मर्म को समझने में सफल हुआ जा सकता है।

हिन्दी शब्दकोश के अनुसार विप्र शब्द का अर्थ कर्मनिष्ठ और धार्मिक व्यक्ति, पुरोहित, मेधावी, विद्वान है। (हिन्दी शब्दकोश डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संन्स, दिल्ली, 2012, पृ.सं. 750)।

सामान्य रूप से विप्र शब्द को सनातन धर्म में अग्रांकित रूप से परिभाषित किया गया है– प्रथम, तैत्तरीय संहिता में विप्र शब्द की व्याख्या बुद्धिमान व्यक्ति, जो उत्पादन में कुशल है। इसके अतिरिक्त शिवपुराण में विप्र को परिभाषित करते हुये कहा गया है कि अच्छे आचरण का कड़ाई से पालन करने वाला बुद्धिमान एवं सदाचारी ब्राह्मण जो वेदों को जानने वाला और अच्छे आचरण वाला, विप्र कहलाता है।

विप्र और ब्राह्मण के भेद को स्कन्दपुराण तथा यास्क मुनि ने स्पष्ट किया है–

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् भवेत द्विजः
वेद पाठात् भवेत विप्रः ब्रह्म जानातीति ब्राह्मणः

अर्थात् जन्म से सभी शूद्रः हैं। संस्कार से द्विज बनते हैं। वेदपाठी विप्र कहलाते हैं तथा ब्रह्म को जानने वाला ब्राह्मण है। इस प्रकार शास्त्रीय अर्थों से एक तथ्य स्पष्ट है कि तुलसी ने उस व्यक्ति को पूजने का पक्ष रखा जो बुद्धिमान है। जिसके ज्ञान से हमें लाभ प्राप्त हो सकता है अथार्त् ज्ञानवर्द्धन हो सकता है। यदि विद्वान में अवगुण हों तो भी उसके गुणों के कारण वह पूज्य है। यहाँ प्रसंग में दुर्वासा ऋषि हैं जिनके सन्दर्भ में चर्चा हो रही है। यह जगप्रसिद्ध है कि वे क्रोधी स्वभाव के थे। यदि मानस की पंक्तियों के पूर्वापर सम्बन्ध को स्थापित किया जाये तो प्रबन्ध काव्य के प्रसंगात्मक अर्थ में यह भी निष्पत्ति हो सकती है कि यदि कोई संत पुरुष श्राप दे रहा हो, कठोर वचन कह रहा हो तो उसके प्रति आदरभाव प्रदर्शित करने से उसकी कठोरता कम की जा सकती है।

विदुर संहिता में क्रोध, लोभ, मोह जैसी स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्तियों से ग्रस्त व्यक्ति ब्राह्मण नहीं होता है। अतः यह भी संभव है कि गोस्वामी जी ने यहाँ दुर्वासा जी के प्रसंग में विप्र शब्द का प्रयोग किया न कि ब्राह्मण शब्द का।

मानस की सन्दर्भित चौपाई का अर्थ पूर्णता के साथ समझने हेतु शूद्र शब्द के वास्तविक अर्थ को समझना आवश्यक है। हिन्दी शब्दकोश में शूद्र शब्द का अर्थ हिन्दुओं के चार प्रमुख वर्णों में से एक, सेवक तथा विशेषण के रूप में शूद्र शब्द का अर्थ अत्यन्त बुरा, निकृष्ट दिया गया है। (हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संन्स, दिल्ली, 2012, पृ.सं. 778)।

यदि सामान्य शब्दकोषीय अर्थ भी लिया जाये तो शूद्र का सन्दर्भ निकृष्ट, दुराचारी से लिया जाना उचित प्रतीत होता है। यदि शूद्र शब्द को हिन्दू धर्म के चार वर्णों के आधार पर लिया जाये तो शूद्र शब्द के शास्त्रीय अर्थ को ग्रहण करना अधिक श्रेष्ठ होगा तथा व्यक्ति के वर्ण का निर्धारण कर्म के आधार पर होगा न कि जन्म के आधार पर।

शूद्र शब्द की व्युत्पबित्त 'शु' अव्ययपूर्वक दु–गतौ धातु में 'ङ' प्रत्यय के योग से हुई है। इसकी व्युत्पत्ति शु द्रवतीति शूद्रः अर्थात् जो स्वामी की आज्ञानुसार/कथनानुसार इधर–उधर आने जाने, सेवा तथा श्रम करने का कार्य करता है। संस्कृत साहित्य में शूद्र के पर्यायवाची शब्द के रूप प्रेष्यः का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ इधर–उधर कार्य हेतु भेजा जाने वाला सेवक से लिया जाता है। (मनुस्मृति 2.32, 7.125 आदि) इसके लिए अन्य शब्द परिचारकः अर्थात् सेवा करने वाला तथा भ्रत्यः अर्थात् नौकर आदि का प्रयोग प्राप्त होता है।

यदि शूद्र शब्द की व्युत्पत्ति शुच्–शीके धातु में रक् प्रत्यय के योग से भी स्वीकार की जाये तो इसका प्रयोग शोच्यां स्थितिमापन्नः, सोचनीति वा अर्थात् जो निम्न स्तर की जीवनस्थिति में है और इसके परिणामस्वरूप चिन्तायुक्त रहता है। यदि शूद्र का सन्दर्भ एकजातिः से लिया जाये तो इसका अर्थ एक ही जन्म से लिया जाता है अर्थात् जिसका जन्म माता–पिता से हुआ किन्तु विद्याध्ययन के रूप में द्वितीय जन्म नहीं हुआ। शूद्रेण हि समस्तावद् यावत् वेदे न जायते (मनु. 2. 172) अर्थात् जब तक वेदाध्ययन नही ं करता तब तक वह शूद्र के समान है चाहे किसी भी कुल में उत्पन्न हुआ हो। ब्राह्मण ग्रन्थों में शूद्र की उत्पत्ति असत् से वर्णित की है। यह बौद्धिक गुणाधारित उत्पत्ति है– असतो दा एषः सभूतः यच्छूद्रः (तैत्तिरीय ब्राह्मण 3.2.3.9) अर्थात् यह जो शूद्र है, यह अशिक्षा/अज्ञान से उत्पन्न हुआ है। विधिवत् शिक्षा प्राप्त करके ज्ञानी नहीं बनने के कारण शूद्र ही रहने का सन्दर्भ प्रस्तुत श्लोक में लिया गया है। महाभारत के शान्तिपर्व में भी उल्लेखित है कि पैरों की तुलना परिचारक अर्थात् सेवक से की गयी है।

मुखजाः ब्राह्मणाः तात, बाहुजाः क्षत्रियाः स्मृताः।
अरुजाः धनिनो राजन्, पादपाः परिचारकाः।।

(शान्तिपर्व 296.6)

यदि इन समस्त शास्त्रीय ग्रन्थों का भी सन्दर्भ ग्रहण करें तो गोस्वामी तुलसीदास की चौपाई की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि ऐसे विद्वान व्यक्ति को भी पूज्य मानना चाहिए जो सामान्य मानवीय गुणों से युक्त नहीं है। यदि प्रसंग के अनुसार अर्थ लिया जाये तो भी यही अर्थ तार्किक प्रतीत होता है। यदि कथानक कालीन परिस्थितियों का सन्दर्भ लिया जाये तो भी उच्च नैतिक मानदण्डों के युग में विद्वान व्यक्ति का सम्मान होता था। यदि

रचनाकालीन परिस्थितियों का सन्दर्भ ग्रहण किया जाये तो इस्लामिक शासन के समय परिस्थितियाँ विपरीत थीं। विद्वान व्यक्ति भी दबाव अथवा भय में अपने नैतिक मानदण्डों के पालन में सफल नही ं हो रहा था किन्तु गोस्वामी जी ने इन सब सन्दर्भों को ध्यान में रखते हुए ही लिखा विप्र पूजिय सकल गुण हीना। यहाँ गोस्वामी जी उस विद्वान को पूज्य नहीं मानते जिसने किसी भी कारण से अपनी विद्वता को सेवाकार्य में लगा दिया हो। यदि गोस्वामी जी के समय की परिस्थतियों अर्थात् देशकाल एवं शास्त्रीय ग्रन्थों का सन्दर्भ ग्रहण किया जाये तो शूद्र ज्ञान गुण प्रवीण हो ही नहीं सकता है क्योंकि शास्त्रीय सन्दर्भों के अनुसार शूद्र वह जो विद्याध्ययन से विरत है। अतः यहाँ गोस्वामी जी का लक्ष्य यह है कि उन विद्वानों को भी अपूजनीय सिद्ध करता है जो विद्वान हाने के बाद भी शूद्र की भाँति जीवनयापन कर रहे हैं अर्थात् किसी शासक अथवा सामन्त के यहाँ परिचारक के रूप में कार्यरत हैं। गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस की चौपाइयों का अर्थ शास्त्रीय संदर्भों, साहित्यिक प्रतिमानों तथा देशकाल को ध्यान में रखकर ही किया जाना तर्कसंगत है न कि वर्तमान समय में प्रयोग किये जा रहे रूढ़ अर्थों तथा पूर्वाग्रहों के आधार पर। मानस की व्याख्या करते समय संस्कृत वाङमय को ध्यान तथा सन्दर्भ में प्रयोग करना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है अथवा अन्य स्थिति में अर्थ का अनर्थ होते देर नही ं लगेगी तथा स्वार्थी व्यक्ति इस अनर्थ को अपने हित में प्रयोग करने में तनिक भी संकोच नहीं करेंगे।

चलभाष : 9336109161

चित्रः साहित्य पर रेखाचित्र

निंदा एक रोमिंग चार्ज की तरह

– डॉ. मीनाक्षी गंगवार
प्रधानाचार्या
राजकीय बालिका हाईस्कूल, सोहरामऊ–उन्नाव

गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है जो लोग तुम्हारी बुराई करते हैं, करेंगे, चाहे तुम अच्छा काम करो या बुरा। इसीलिए शांत रहकर अपना कर्म करते रहो। निंदा से मत घबराओ। निंदा उसी की होती है जो जिंदा है। मरे हुए की तो बस तारीफ होती है।

हम सभी जानते हैं कि एक देश से दूसरे देश में जब हम अपने परिजनों को फोन करते हैं तो फोन करने वाले और फोन सुनने वाले दोनों को धन के रूप में रोमिंग चार्ज लगता है। इसी प्रकार किसी की निंदा करने वाले और निंदा सुनने वाले दोनों पर पाप कर्म के फल के रूप में चार्ज लगता है।

ना बिना परवादेन रमते दुर्जनो जनरू, काकरू सर्वरसान् भुक्ते विनाऽमध्यं न तृप्यति।

लोगों की निंदा किए बिना दुर्जनों को आनंद नहीं आता। कौए को सब् रस भुगतने के बावजूद गंदगी बिना तृप्ति नहीं होती। दूसरों के चरित्र पर बना सुई की नोक के बराबर छिद्र भी हमें तत्काल नजर आ जाता है। हम पूरी तत्परता से उसे चौड़ा करने में जुट जाते हैं यानी बढ़ा चढ़ा कर दूसरों से कहने में व्यस्त हो जाते हैं। इस बात की परवाह किए बगैर कि सामने वाले से कई गुना अधिक कमियां हममें भी हो सकती हैं। हमारे मन में स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ दर्शाने की भावना उस समय सूक्ष्म अहंकार का रूप धारण कर लेती है।किसी भी वस्तु को देखने के लिए हमें फासले की जरूरत होती है। आईने में हमें अपनी शक्ल तभी नजर आती है जब हम थोड़ा सा फासला रखते हैं। अगर कोई इस बात की तरफ ध्यानाकर्षण भी करें तो हम अपने पक्ष में उलटे सीधे तर्क जुटा लेते हैं जबकि अहंकार के वशीभूत होकर हम उन्हें निर्ममतापूर्वक उधेड़ने में लग जाते हैं।

निंदा का उद्देश्य सुधार करना नहीं वरन् अपयश करना होता है। उसका काम किसी की बुराई करके अपने मन की ईर्ष्या,कुंठा और प्रतिशोध की भावना शांत करना होता है।

जो लोग अपने जीवन में अपनी गलतियों से सफल नहीं हो पाते वही लोग अक्सर दूसरों की निंदा करते हुए पाए जाते है। उन्हें पता होता है फिर भी वह निंदा करते हैं। क्योंकि निंदा करने में बुराई सुनने के लिए उन्हें उन्हीं की तरह मित्र भी मिल जाते हैं। जलन और ईर्ष्या रखने वाले आसानी से दोस्त बन जाते हैं। दूसरी वजह होती है जीवन में खुशी की कमी और असफलता।

रामायण महाभारत की जड़ में निंदा रस सबसे बड़ा कारण रहा है। मंथरा, शकुनी उस्ताद थे। बड़ी–बड़ी सल्तनतें भी इसी वजह से बनी और बिगड़ीं। मीडिया कंपनियां, बुद्धिजीवी, पड़ोसी इसी काम में अनन्य भाव से लिप्त रहते हैं। चाय से भी ज्यादा जरूरी लोकप्रिय मादक द्रव्य है निंदा।

ज्यादातर लोग अपने रिश्तेदार दोस्त भाई बंधु परिवार पड़ोसी की निंदा करते हैं।

★ ऐसा करने से हम उन सब का विश्वास खो देते हैं।

★ समय का नुकसान होता है। क्षणिक आनंद के लिए खुद के और दूसरों के विचारों को भी नकारात्मक बनाते हैं।

★ ऊर्जा व्यर्थ करते हैं जिसका उपयोग हम अच्छे कामों में कर सकते हैं।

★ निंदा करने वाला व्यक्ति स्वयं की कमजोरी ही दर्शाता है।

अगर आप दूसरों की निंदा करते हैं तो अकेले में बैठ कर 10 मिनट सोचिए कि क्या आप दुनिया में दूसरों की निंदा करने के लिए आए हैं? हर कोई अपने आसपास के सच्चाई जानता है। जीवन बहुत सुंदर है। व्यर्थ के अवगुणों में उलझ कर इसकी सुंदरता को नष्ट न करें। अगर आप में दूसरों की निंदा करने की आदत है तो उसे तुरंत छोड़ दीजिए।

अगर आप किसी में बुराई देखते भी हैं तो उस व्यक्ति को अकेले में बुराई बताइए। जिससे उसमें सुधार होगा और आप भी निंदा करने से बच जाएंगे।

खुल सकती है गाँठें बस जरा से जतन से, लोग कैंचियाँ चलाकर सारा फसाना बदल देते हैं।

आत्महत्या नहीं

– कृपाशंकर मिश्र 'खलनायक'
गाजीपुर, उ0प्र0

शाम को घर लौटते समय पिता का मन कुछ उद्विग्न सा था! बेटे का अब तक फोन नहीं आया था! तो क्या रिजल्ट आज भी नहीं निकला!
हो सकता है ना निकला हो!
या क्या पता, निकला हो!
फिर तो बेटे का फोन आना चाहिए था!
तो क्या .....!
बस!
इससे आगे सोचने की ताब न थी उनमें! दिल बैठता सा महसूस हुआ था!
इसी उधेड़बुन में घर पहुँचे तो पत्नी को आँगन में सोचों में गुम पाया!
क्या बात है, चूल्हा नहीं जला अब तक!
बस, आग सुलगाने ही जा रही थी!
बेटे ने फोन किया था?
हाँ!
रिजल्ट निकल गया उसका?
हाँ!––पत्नी ने संक्षिप्त जवाब दिया।
आगे कुछ पूछने की जरुरत नहीं थी! पास होता तो पत्नी उनके पूछने से पहले ही पूरी कथा सुना रही होती!
विचलित तो बहुत होगा वो!
हाँ, पर आपको लेकर!
मुझे लेकर!
कह रहा था, पापा का सपना तोड़ दिया! कर्जे के बोझ से दबे कैसे उन्होंने मुझे कोटा भेजा, मैं ही जानता हूँ!
अरे, तो क्या हुआ! हर बाप अपने बेटे के लिए ऐसा करता है! पागल कहीं का, फालतू बातें सोचता रहता है! और कुछ कहा क्या उसने!
पत्नी की आँखों में आँसू आ गये––कह रहा था, मन करता है कि पंखे से लटक जाऊँ!
अरे पागल! और तू मुझे अब बता रही है!
घबराते हुए उन्होंने जल्दी से फोन लगाया बेटे को! दूसरी बार जाकर फोन लगा...
अपनी माँ से क्या अंट–शंट बक रहा था?
कुछ भी तो नहीं पापा!
और तेरी आवाज को क्या हुआ! हमेशा चहकता रहता था और आज इस तरह....!
पापा, मुझे माफ करना!

माफ! तूने चोरी की, किसी का अहित किया?
नहीं पापा, मैं फिर से फेल हो गया!
तो!
आपका सपना टूट गया!
वो मेरा नहीं, तेरा सपना था पगले! मैं तो बस तेरी जरुरतें पूरी कर रहा हूँ!
फिर भी, कालिख तो पोत ही दी आपके चेहरे पे!
बिल्कुल नहीं बेटे! तूने कुकर्म किये होते, किसी लड़की का शीलभंग किया होता, तब मेरे चेहरे पे कालिख पुतती! तू केवल फेल हुआ है, कागजी पढ़ाई में!
पर फेल होने का नतीजा तो आप जानते हैं न पापा?
अच्छी तरह जानता हूँ! फेल होने का बस इतना ही परिणाम होगा कि तू कभी जीवन में इंजीनियर नहीं बनेगा!
ये कम है क्या पापा?
बहुत कम! इस विराट जीवन की उपलब्धि क्या केवल डॉक्टर, इंजीनियर या फिर क्लास वन का नौकर बनने में है! ये मात्र रोटी कमाने का जरिया भर है बेटे! और जीवन में ईमानदारी से रोटी कमाने के हजारों तरीके हैं!
पर मैंने तो कुछ और सोचा था पापा!
क्या?
यही, कि मैं वो काम करुँगा जिसपर आप गर्व करेंगे, समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी!
मेरा गर्व तो तू है बेटे, और आज तक तेरे बारे में कुछ भी बुरा नहीं सुनने को मिला मुझे किसी से! इससे अधिक प्रतिष्ठा और क्या होगी!
फिर भी....!
अरे क्या फिर भी! ना तेरे बाबा किसी बड़े पद पर थे, ना मैं! तो क्या हमारे खानदान की नाक कट गयी, या हममें से किसी ने आत्महत्या कर ली!
मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा पापा!
कुछ समझना भी नहीं है! तू इन सबको भुला और मन लगाकर पढ़! आगे ईश्वर ने जो तेरे भाग्य में लिखा है, वो होगा! और हाँ, दिवाली की छुट्टी में घर आ! हम मिलकर इकट्ठे सफाई करेंगे, खरीददारी करेंगे, दीये जलायेंगे!
हूँ!
आ, इस बार तुझे खेत घुमाता हूँ! खूब मोर और हिरन देखने को मिलेंगे! मधुमक्खियों ने बगीचे में छत्ता भी लगाया है, उसमें से शहद निकालेंगे! और हाँ, इस बार फूलों की खेती भी अच्छी हुई है। तितलियों के पीछे भी भागेंगे! देखना, बहुत मजा आता है इसमें!
दूसरी ओर से बेटे की हँसी गूँजी––क्या पापा! आप अभी भी बच्चों जैसी बातें करते हैं!
अच्छा! तो मेरा ही जन्मा, मुझे ही सयानापन सिखा रहा है!
तो सीख लीजिये ना! क्या हर्ज है!
सयानापन अपने साथ संताप लाता है बेटे! मेरी तरह बचपने को बचाये रख! जीने का इससे बेहतर तरीका और कुछ नहीं है!
दूसरी तरफ बेटे ने चैन की एक लंबी साँस ली! जीवन का मर्म वो समझ चुका था! छत से लटकते पंखे से अब भय की आँधी नहीं बल्कि ठंडी हवा आ रही थी!'

विलायती बैंगन और शैतानी सेब

खबरें बता रही हैं कि अर्थव्यवस्था में हम अभी पाँचवें पायदान पर हैं और अमेरिका को पीछे छोड़ने की ओर उन्मुख हैं। खबरें यह भी बता रही हैं कि पिछले तीन माह से थोक भावों का महँगाई सूचकांक औंधे मुँह गिर पड़ा है। खबरों में यह भी खुलासा किया गया है कि विगत आठ साल में थोक सूचकांक सबसे कम बढ़ा।

मगर खुदरा भावों पर समाचार मौन हैं। जारी आँकड़ें बता रहे हैं मुद्रा स्फीति की दर जो पिछले वर्ष जून में सात प्रतिशत थी, वो अब पछाड़ खाकर साढ़े चार रह गई है। जून में बाजार गया तो आलू–मिर्च उछाल मार रहे थे। आलू–मिर्च से राहत मिली तो टमाटर और अदरक आँखें तरेरने लगे।

मैने सब्जी के एक परिचित थोक विक्रेता से पूछा, ''भाऊ! खुदरा बेचने वालों को टमाटर क्या भाव दे रहे हो?''

वह मोनालिसी मुस्कान के साथ फुसफुसाया, ''अस्सी रुपये किलो।''

मैं चौका, क्योंकि खुदरा बाजार में तो विक्रेताओं द्वारा, ग्राहकों को एक सौ पचास से लेकर दो सौ रूपये किलो तक बेचा जा रहा है। लिहाजा, मुझे अब, थोक मूल्य सूचकांक के गिरने और खुदरा के बढ़ने का रहस्य समझ में आया। गरीब उत्पादक यहाँ भी पिसा जा रहा है। थोक विक्रेता ने उससे अधिक–से–अधिक चालीस रूपये किलो में खरीदा होगा और बेच रहा है, अस्सी में।

वाजिब दाम न मिलने पर कभी सड़कों पर भारी मात्रा में फेंका जाने वाला टमाटर, अब खेतों से चुराने या वाहनों से लूटने वाला वी.आई.आई. (वेरी इम्पोटिंग आइटम) हो गया है। टमाटर के बगैर सब्जी और अदरक के बिना चाय का लुत्फ ही नहीं आता। अभी हम बिन टमाटर टर्र–टर्र करने लगते हैं। सोच रहा हूँ कि सोलहवीं सदी से पहले हम टमाटर के स्थान पर क्या खाते होंगे?

सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों के जरिए (कुछ संदर्भ मैक्सिकोवासियों का बताते हैं) टमाटर भारत पहुँचा था। वे इसे 'लव एप्पल' पुकारते थे, लेकिन हमारे यहाँ लोगों ने उसे जहरीला फल समझा, इसलिए इसका उपयोग खाने के रूप में नहीं किया। तब, इसे उद्यान की सज्जा बनाए रखने के लिये ही बोया जाता था। लाली मेरे लाल (टमाटर लाल) की जित देखूँ तित लाल...। जोकि इस 'लव एप्पल' का सुर्ख रंग देखने वालों का मन मोह लेता था, किंतु कुछ दिलजनों ने इस 'टमाटर लाल' को 'विलायती बैंगन' का दर्जा दे दिया था।

बहरहाल, इन दिलजनों ने आरंभ में आलू को भी 'डेविल एप्पल' कहकर बदनाम किया था। आलू से कोढ़ हो जाने का भय दिखाया। मगर, पेरू में जन्मा ये 'शैतानी सेव' सत्रहवीं सदी में भारत में आकर आलू हो गया, फिर न जाने कैसे समोसे में जा घुसा।

बिहार की सत्ता में लालू हों या नहीं, किंतु समोसे में आलू की घुसपैठ है और रहेगी। आलू जैसा दिलदार कोई और नहीं, क्योंकि ये चाट से लेकर चिप्स, पापड़, कोफ्ता, आइस्क्रीम, केक, कीमा, गोंद, स्टार्च, दफ्ती, कागज सबमें समाहित होने को सदा आतुर रहता है।

सोच रहा हूँ कि सत्रहवीं सदी से पहले सब्जियों के राजा आलू के बिना लोग कैसे गुजर करते होंगे?

अब, अदरक को ही लीजिए। ये नाचीज–सी चीज इस वक्त बड़े भाव खा रही है। 'बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद' में अब, बंदर की जगह आदमी है। मगर जिन्होंने समय रहते इसे सुखाकर पाउडर बना लिया, अब वे सुखी है और बाकायदा आदमी भी बने हुए हैं। अदरक भी अपनी कब थी? ये भी परदेशी है। इसकी पैदाइश दक्षिण पूर्व एशिया में हुई थी। ऑस्ट्रोनेशियन लोगों द्वारा बोयी गई और कदाचित सबसे पहले उन्हीं के द्वारा इसे इंडो–पैसिफिक में लाया गया।

तभी तो कहा है 'परदेशियों से अँखियाँ लड़ाना' हमने परदेशी 'लव एप्पल' से नैन ही नहीं लड़ाए, वरन उनसे मुँह भी लड़ाया....सो अब, भुगतो।

साभार!

– प्रभाशंकर उपाध्याय

नगर पंचायत नवाबगंज, उन्नाव की तरफ से ''अभ्युदय सेवा संस्थान'' द्वारा आयोजित सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

नगर पंचायत नवाबगंज, उन्नाव को स्वच्छ बनाये रखने एवं स्वच्छता अभियान में सहयोग हेतु नागरिकों से निम्न अपील करती है।

स्वच्छ नवाबगंज
हमारा नवाबगंज साफ हो
इसमें हम सब का हाथ हो

1. कूड़ा कचरा सड़क पर न फेंके।
2. गीले कूड़े के लिए हरे व सूखे कूड़े के लिए नीले डस्टबिन का प्रयोग करें।
3. कूड़े को पृथक कर कूड़ा सिर्फ कूड़ा गाड़ी/रिक्शे में ही डालें।
4. शौचालय का प्रयोग करें।
5. पालतू पशुओं को आवारा न छोड़े।
6. सड़कों या फुटपाथ पर न ही जानवर बांधे और न ही खूंटे या चरही आदि का निर्माण करे।
7. नालियों का पानी अवरूद्ध न होने दें।
8. सामुदायिक एवं सार्वजनिक शौचालयों का प्रयोग करें एवं उन्हें साफ स्वच्छ रखने में सहयोग प्रदान करें।
9. सार्वजनिक जगहों पर बैनर, होर्डिंग्स, पोस्टर, झंडे इत्यादि न लगायें।
10. नाला/नालियों, सड़कों के किनारे व खुले में मूत्र विसर्जन व शौच न करें, यह दण्डनीय अपराध है।
11. पॉलिथीन का प्रयोग अति हानिकारक है। अतः इसका प्रयोग न करें और न ही किसी को करने दें, आपके पास पॉलिथीन पाए जाने पर अर्थदण्ड वसूल किया जायेगा।
12. भवन निर्माण सामग्री को सड़क, नालियों व फुटपाथ पर न रखें, मकान से निकलने वाले मलबे निस्तारण हेतु निकाय से अर्थदण्ड वसूल किया जायेगा।

ओम प्रकाश
अधिशाषी अधिकारी
नवाबगंज, उन्नाव

स्वच्छ नवाबगंज
खुले में
शौच न जाएं,
वातावरण को
स्वच्छ बनायें

दिलीप लश्करी
नगर-पंचायत-अध्यक्ष
नवाबगंज, उन्नाव

शालिग्राम जी का राम हो जाना

– अखिलेश ओमर

आधुनिक विज्ञान ने बताया है कि ये शालीग्राम पत्थर 6 करोड़ साल पुराने हैं। हो सकता है ये पत्थर 6 करोड़ साल से अभिशप्त हों और माता अहिल्या की तरह मुक्ति के लिए तपस्या कर रहे हों..??

खैर, राम की महिमा तो राम ही जानेंगें। मैं तो एक तुच्छ प्राणी हूँ भला ऐसी घटनाओं पर क्या प्रतिक्रिया दे सकता हूँ. ?लेकिन प्रभु श्री राम जी की महिमा तो देखिए कि इन पत्थरों को मुक्ति भी मिली तो नेपाल की गंडक नदी से, और ईश्वर की कृपा हुई तो ये पत्थर स्वयं भगवान हो ही गए ।।

मेरा ईश्वर में अतिविश्वास हैं। मैं घोर आस्तिक हूँ मुझे पता है कि धरती के कण–कण में हमारे भगवान हैं। हमारे अगल–बगल हर जगह विद्यमान हैं। सबकुछ वही कर और करा रहे हैं। अब देखिए अयोध्या जी में उत्सव का माहौल है क्योंकि प्रभु श्री राम लला वर्षों बाद अपने जन्मस्थान पर जा रहे हैं तो ऐसे शुभ कार्य में उनके ससुराल वाले कैसे पीछे रहते।नेपाल की गंडकी नदी से वर्षो पुराने श्री शालिग्राम बाहर निकले हैं।

ये पत्थर मानो भक्ति में 6 करोड़ साल से डूबे हुए थे।

प्रभु के कहने से बाहर आए।

अब प्रभु की इच्छा से तय किया गया कि इनसे प्रभु श्री राम जी के मंदिर के गर्भगृह के लिए श्री सीताराम जी की अप्रतिम मूर्ति बनाई जाएगी।

प्रभु की लीला देखिए।

वर्षों से तपस्या में लीन श्री शालिग्राम जी को आशीर्वाद में राम होना मिला हैं। कहते हैं न कि कण कण में राम हैं तो शालिग्राम के कण–कण में श्रीराम हैं। जब नेपाल से श्री शालिग्राम जी ने राम होने की यात्रा शुरू की,तो रामभक्तों का जमावड़ा सड़क किनारे लगने लगा और अपने सजल और कातर नेत्रों से देखने लगी कि किस भाग्यवान के हिस्से में श्रीराम होना लिखा है और लंबी प्रतीक्षा के बाद शालिग्राम पत्थर से राम होना है।उनके उस स्वरूप को आँख भर देख लेना चाहते हैं।

बूढ़े–बुजुर्ग अपनी पीढ़ियों को बतला रहे होंगे, आँखें इन पलों को देखने के लिए व्याकुल थीं। न जाने कितनी आँखें इस घड़ी की प्रतीक्षा में सो गई। उन्हें श्रीरामजी को जाते देखना न लिखा था।

देखो,राम जा रहे हैं और अपनी जन्मभूमि श्री अयोध्या जी की गोद में बैठ जाएंगे।

युवा इन दृश्यों को समेटकर अपनी सबसे बड़ी विरासत में जोड़ लेंगे और आने वाली पीढ़ियों को बतलाएँगे कि उन्होंने श्री शालिग्राम को अपनी आँखों से जाते व राम होते देखा है,मेरे प्रभु श्री राम यहीं से होकर गुजरे और विश्राम को ठहरे थे, हमने उन्हें स्पर्श किया था।तुम जिन्हें देख रहे हो वो स्वयं प्रभु श्रीराम जी हैं।

हमने उन्हें श्री राम होते देखा था,इन आँखों ने जीवन का सबसे सुखद पल संभालकर रखा हुआ है।ताकि तुम्हें अपनी विरासत सौंप सके। राम को देखने लोग घरों से निकल आए,किसी ने आवाज तक न लगाई, न किसी से निमंत्रण दिया।बस अपने प्रभु के आने की आहट मात्र से पहचान गए कि उनके प्रभु अयोध्याजी के लिए निकल रहे है और कभी भी उनके द्वार से होकर गुजर सकते हैं। उनके स्वागत में हजारों की संख्या में श्रदालुओं का हुजूम उमड़ पड़ा। आखिर श्री शालिग्राम जी को श्रीराम बनने के लिए जाते कौन न देखना चाहेगा।उन शिलाओं ने न जाने कितनी तपस्या की होगी, कि स्वयं प्रभु श्रीराम मिले उनका कद भी अयोध्याजी के मुकाबले रहा होगा। क्योंकि दोनों में राम बसे हैं, उन आँखों को देखना चाहिए जो पूछती थीं। राम कब आएंगे,देखिए राम जा रहे हैं। रामभक्त उनका दर्शन लाभ ले रहे है।भगवान श्रीराम जी का मंदिर वास्तव में इतना विराट सपना था जो पूरा हो रहा है... भगवान ने पूर्व में ही सब निश्चित करके रखा था। सब मैनेज कर रखा था,अब उनका दिव्य भव्य और अप्रतिम घर बन रहा है।

सम्बन्धों में समर्पण होना ही चाहिए

– सर्वेश तिवारी श्रीमुख
गोपालगंज, बिहार

एक ओर पिता के द्वारा पति का अपमान किये जाने पर विरोध में आत्मदाह करने वाली माता सती, और दूसरी ओर मृत पत्नी के शव को कंधे पर उठा कर तांडव करते रुद्र! यदि प्रेम को देखा जा सकता है तो सृष्टि ने सर्वप्रथम शिव को ही देखा होगा।

कैसी विडम्बना है न! शिव एक ओर तो संहार के देव हैं, उनका कर्तव्य ही है जीवों को मृत्यु देना। और वही शिव अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद करुण विलाप करते हैं, विक्षिप्त की भाँति व्यवहार करते हैं, उनके मृत शरीर को कंधे पर उठा कर तांडव करते हैं। अद्भुत है न? प्रेम अद्भुत ही होता है। जो संहार के देवता के अंदर भी करुणा उत्पन्न कर दे, वही प्रेम है।

भारत की हर सामान्य पत्नी का मृत्यु के समय पति के कन्धे की इच्छा शायद उसी शिव लीला का प्रभाव है। कौन पत्नी शिव जैसा पति नहीं चाहेगी?

भारतीय परम्परा का पुरुषवादी दम्भ कहता है कि पुरुष को किसी के समक्ष रोना नहीं चाहिए। यदि अश्रु निकलें भी, तो अकेले में निकलें। और उसी भारतीय परम्परा का पूज्य देव अपने भक्तों, अपने सेवकों के समक्ष फूट–फूट कर रोये तो क्या कहेंगे? जो पुरुषवादी दम्भ को पल भर में ही छिन्न–भिन्न कर दे, वह प्रेम होता है।

कैसा लगता होगा तब, जब विश्व का सबसे बड़ा योद्धा अपनी प्रेयसी की मृत्यु पर एक बालक की भाँति विलाप करता हुआ सबकुछ तोड़–फोड़ देने पर उतर आया होगा? ठीक वैसे ही जैसे कोई बच्चा अपना प्रिय खिलौना छीन लिए जाने पर सबकुछ पटक कर तोड़ने लगता है...

पौराणिक कथाओं में शिव को औघड़दानी कहा गया है, अर्थात थोड़ी सी तपस्या पर प्रसन्न हो कर बिना सोचे–समझे कुछ भी दे देने वाले देव। सती की मृत्यु ने उस औघड़दानी शिव को कैसा बना दिया? त्रिशूल ले कर सबकुछ उलट पुलट देने को आतुर शिव, यज्ञ विध्वंस करने वाले शिव...

जो शिव यज्ञों के रक्षक हैं, जो स्वयं में यज्ञ हैं वे जब दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करते हैं तो वहाँ शिव देव नहीं, केवल एक पति लगते हैं। यह एक पति का प्रेम ही था जिसने देवाधिदेव से यह अनर्थ करा दिया।

वस्तुतः शिव और सती का प्रेम प्रेमी–प्रेमिका का प्रेम नहीं, पति–पत्नी का प्रेम था। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो प्रेमी–प्रेमिका का प्रेम सामान्यतः सुख के दिनों का प्रेम होता है। वह जीवन भर के लिए भी तब ही होता है जब दोनों पति–पत्नी हो जाएं। पर पति–पत्नी का प्रेम जन्मों–जन्मों के लिए होता है। तभी तो मृत्यु के बाद पुनः पार्वती के रूप में जन्मीं सती शिव को ही ढूंढती रहीं, और तांडव के बाद शिव भी तब तक तपस्या में डूबे रहे, जब तक सती पुनः जन्म ले कर उनके पास नहीं आईं।

एक बार जूना पीठ के महामंडलेश्वर अवधेशानंद गुरुजी ने अपने प्रवचन में कहा था, सम्बन्धों के चिरंजीवी होने के लिए केवल अच्छी केमेस्ट्री ही काफी नहीं होती। दो व्यक्तियों की केमेस्ट्री कभी नहीं मिलती। सम्बन्धों में समर्पण होना चाहिए। अपने सम्बन्धी के प्रति समर्पण हो तो सम्बन्ध कभी कमजोर नहीं होते। शिव और सती की कथा भी समर्पण की कथा है, तभी यह कथा युगों की सारी सीमाएँ लाँघ गयी।

सती के उस चरम समर्पण का प्रभाव, या उनके प्रति लोक की श्रद्धा ही थी कि जब मध्यकाल में तुर्कों–अरबों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों के भय से युद्ध मे पराजित होने वाले भारतीय राजाओं की स्त्रियाँ आत्मदाह करने लगीं तो उन्हें भी सती कहा गया।

पुराणों के अनुसार पति–पत्नी ही एक दूसरे के सबसे अच्छे मित्र होते हैं। शिव और सती भी मित्र ही होंगे... आज मित्रता दिवस के दिन सृष्टि के उस सर्वश्रेष्ठ मित्र–जोड़े से प्रार्थना है कि उनकी कृपा हम सब पर बनी रहे।

हर हर महादेव।

दो रूपये की चोरी

- प्रेम कुमार सिंह
प्रदेश अध्यक्ष
यू.पी. मेडिकल एण्ड पब्लिक हेल्थ
मिनिस्ट्रियल एसोसिएशन

यह बात अस्सी के दशक की है, जब मैं गाँव के प्राइमरी स्कूल में कक्षा तीन में पढ़ता था। बचपन में मुझे पढ़ने लिखने में बिल्कुल रुचि नहीं थीं। घर से स्कूल के लिए जाता था और इधर उधर से घूम कर लौट आता था। बहुत दिनों बाद यह बात घर में पता चली। मेरी सबसे बड़ी बहन गीता दीदी उसके अगले दिन मेरा बस्ता और पाटी लेकर बोलीं–स्कूल चलो। मैंने बोला, मैं चला जाऊंगा। वह बोली नहीं, मैं साथ चलूंगी। बहुत बहाने बनाये पर वह नहीं मानी क्योंकि वह मेरी हरकते जान चुकी थी। मेरे आना कानी करने पर वह डाँटती–मारती हुई मुझे स्कूल लेकर गई। उसदिन की डांट– मार मुझे आज भी याद है। पढ़ाई को लेकर एक बार दीदी से और एक बार भाई से कुछ ज्यादा ही मार खाई। दोनों डॉट–मार ने दिशा बदलने का काम किया। आगे कभी भाई की मार के बारे में भी लिखूंगा, अभी दीदी की डांट–मार ने स्कूल पहुँचा दिया था। उस दिन दीदी की मार से एक परिवर्तन हुआ। मैं स्कूल बराबर जाने लगा। दीदी की डांट–मार से स्कूल जाना तो शुरू हो गया पर पढ़ाई से मेरा दूर–दूर तक अभी भी कोई लेना देना नहीं था। सौ तक गिनती एवं क,ख, ग,घ शायद ही मुझे पूरा आता था।

आज तक प्राइमरी के स्कूलों में आपने किसी को फेल होते सुना है, नहीं सुना होगा। गीता दीदी ने मेरा पीछा पकड़ लिया था। उन्होंने देखा यह अभी भी पढ़ लिख नहीं रहा है, उन्होंने मास्टर साहब से बात की जो मेरे रिश्तेदार भी लगते थे और मुझे कक्षा तीन में फेल करा दिया। उन्होंने सोचा था कि एक बार फेल हो जाएगा तो पढ़ने में मन लगाएगा। मास्टर साहब रिश्तेदार, फिर भी हम कक्षा तीन में फेल हो गए।अफसोस तो बहुत हुआ लेकिन मेरे ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ा।

पढ़ाई ऐसे ही चल रही थी। एक दिन स्कूल के प्रांगण में चटाई बिछवाकर मास्टर साहब पढ़ा रहे थे। सब बच्चे बैठे थे। एक बच्चा खड़ा होकर दुई का दुवा, दुदन्नन चार कह रहा था और हम लोग दोहरा रहे थे। उसी समय मुझे अपने सामने दो रुपये का सिक्का पड़ा दिखाई दिया, मैंने इधर–उधर देखा और सबकी नजर बचाकर दो रूपये का सिक्का उठाकर पैंट की जेब में डाल लिया। दो रुपये पड़ा पाकर मन बड़ा प्रसन्न था कि आज छुट्टी के बाद दुकान पर जाएंगे चूरन, फुकनी, लैय्या, पट्टी सब खाएंगे, मगर यह प्रसन्नता ज्यादा देर टिक न पाई।

कुछ देर बाद एक बच्चा रोता–चिल्लाता मास्टर साहब के पास पहुँचा, मास्टर साहब मेरा दो रुपये का सिक्का किसी ने चुरा लिया। यह सुनते ही मेरी हालत खराब, चोर की दाढ़ी में तिनका।

मास्टर साहब ने कहा देखो यहीं कहीं गिरा होगा, सब बच्चे सिक्का खोजने लगे। मैं भी उनकी मदद करने लगा, लेकिन वह सिक्का नहीं मिला। मिलता भी कैसे, वह तो मेरी ही जेब में था।

जब सिक्का नहीं मिला तो मास्टर साहब ने कहा, ''सब लोग लाइन में खड़े हो जाओ''। सब लाइन में खड़े हो गए। उन्होंने कहा देखो जिसके पास सिक्का हो दे दो। मैं किसी को मारूँगा–पीटूंगा नहीं। मेरी हालत बहुत ही खराब कि क्या करूँ सबके सामने सिक्का दूँगा तो बच्चे चोर कहेंगे। मन बना लिया कि सिक्का नहीं दूंगा। मास्टर साहब अभी डांट कर छोड़ देंगे और मै बच जाऊंगा। पर मास्टर साहब कहाँ छोड़ने वाले थे। प्राइमरी के मास्टर जो ठहरे।

उन्होंने कहा कि अब सबका झरता लिया जाएगा यानि तलाशी, सब लोग खडे हो जायें। काटो तो खून नहीं वाली स्थिति कि अब नहीं बच पाएंगे। आज चोरी खुल जाएगी, बच्चे चोर कहेंगे। उधर एक तरफ से तलाशी शुरू, इधर मरने जैसी स्तिथि की कैसे बचा जाए। मन मे आया सिक्का को फेक दिया जाए, लेकिन कैसे ? कोई फेंकते हुए भी देख लेगा तो पकड़ा जाऊंगा। अब बचने का कोई रास्ता नहीं था सिर्फ यह कि इसको फेंका जाए वह भी अपने सामने नहीं।सिक्का धीरे से जेब से निकालकर कुछ दूर फेंका और कोई देख नहीं पाया। फेंकते ही ऐसा लगा जैसे दूसरा जनम मिल गया, भगवान ने आज बचा लिया। सिक्का किसी के पास तलाशी में नहीं निकला, कुछ देर बाद जमीन पर पड़ा मिला। बच्चों ने चिल्लाया मास्टर साहब दो रुपये का सिक्का मिल गया। मास्टर साहब ने सिक्का जिसका था उसको दे दिया। जान बची तो लाखों पाएं।

इस तरह चोरी के आरोप से बच पाया। सामान्यतः आप लोगों को भी कक्षा दो या तीन के बातें याद नहीं होंगी, मुझे भी ज्यादातर नहीं याद हैं, लेकिन इस घटना के कुछ मिनट इतने असहनीय और अपराध बोध से ग्रसित थे कि घटना ने मन–मस्तिष्क पर ऐसी छाप छोड़ी कि पुनः ऐसी पुनरावृत्ति जिंदगी भर नहीं हुई।

बारात फिर से आयेगी

– कृपाशंकर मिश्र 'खलनायक'
गाजीपुर, उ0प्र0

जेठ महीने के कृष्णपक्ष की शुरुआत हो चुकी थी। जिस समय मैं माधोपुर के बस स्टैंड पर उतरा, दोपहर हो चुकी थी! मैंने लोगों से मुकुंदपुर जाने का रास्ता पूछा!

दरअसल शादी का मामला था! वहीं के रहने वाले अवध तिवारी ने भाईसाहब को चिट्ठी लिखी थी। उनके पड़ोस में कोई लड़का था जो प्राइवेट सेक्टर में अच्छा–खासा पैसा कमा रहा था! घर–परिवार से भी ठीकठाक था, सो भतीजी के लिए देखने में कोई हर्ज नहीं था!

तकरीबन महीने भर पहले चिट्ठी मिली थी पर भाईसाहब व्यस्तता के चलते नहीं जा पाये थे और मुझे भेज दिया!

बस स्टैंड से मुकुंदपुर लगभग तीन मील दूर था, जहाँ जाने के लिए पैदल के सिवा किसी बस–जीप वगैरह की सुविधा नहीं थी!

मैंने कंधे से झोला लटकाया और सिर पर गमछा बाँधे चल पड़ा, पर अभी मुश्किल से एक मील ही चला होऊंगा कि मारे धूप के सिर चकराने लगा! प्यास के मारे गला चटकने लगा था!

एक तो अंजानी जगह, दूसरा, दूर दूर तक किसी आदमजात का कोई निशान नहीं!

होता भी कैसे!

जेठ की इस भरी दुपहरिया किसी को क्या पड़ी थी बाहर निकलने की!

तभी मेरी आँखों में आशा की किरण कौंधी!

दूर कहीं एक बगीचा नजर आ रहा था!

संभवतः वहाँ कोई हो!

मैंने हिम्मत बटोरी और तेज तेज कदमों से उधर चल पड़ा!

पास जाने पर जी में जी आया! वो एक छोटा सा बगीचा ही था जिसमें चार–पाँच पेड़ थे। पेड़ों के बीच टूटा–फूटा एक अधकच्चा मकान और बगल में एक कुआँ था!

मुझे जोरों की प्यास लगी थी, पर कुएं से पानी निकालने का कोई साधन नहीं था!

मैं विवशता में पेड़ के नीचे बैठ लंबी लंबी साँस लेने लगा!

प्यास लगी है बच्चा? अचानक एक धीमा स्वर मेरे कानों में पड़ा।

मैंने हड़बड़ाकर आँखें खोलीं तो सामने गेरुए वस्त्र में एक साधु को पाया! लंबी घनी दाढ़ी–मूँछे जटाजूट में उनके वृद्ध चेहरे पर एक अलग ही आभा दिख रही थी!

उन्होंने अपना कमंडल मेरी ओर बढ़ाया–लो, पहले पानी पियो, फिर कुछ पूछना!

मैंने एक साँस में पूरा कमंडल खाली कर दिया!

बाहर से आये हो?

जी बाबा!

जाना कहाँ है?

मुकुंदपुर!

ओह्ह! पर वो तो अभी दूर है, उपर से ये दुपहरिया! आओ मेरे साथ!

कहकर साधु बाबा बिना मेरे जवाब की प्रतीक्षा किये उस अधकच्चे मकान की ओर बढ़ गये!

मैं भी उनके पीछे पीछे चल पड़ा!

कमरे में पहुँचकर मानो मेरी थकान जाती रही!

मिट्टी की दीवारों ने गर्मी की तपन को अंदर नहीं आने दिया था! वहीं एक कोने में बाबा की कथरी बिछी हुई थी। बगल में हीं उनकी गठरी भी रखी थी!

अब इस दुपहरिया कहाँ जाओगे! यहीं बिता लो!–साधु बाबा ने कहा।

ख्याल बुरा नहीं था! शाम तक यहाँ आराम से रुका जा सकता था। वैसे भी यहाँ से मुकुंदपुर की दूरी घंटे भर से अधिक नहीं थी।

मैंने भी बगल में अपना अंगोछा बिछाया और लेट गया। बातों का सिलसिला चल पड़ा!

मुकुंदपुर जाने का कोई खास प्रयोजन बच्चा?
मैंने बाबा को संक्षेप में सारी बातें बता दीं!
हूँ! अवध तिवारी को अच्छे से जानता हूँ मैं!
वो कैसे बाबा?
अरे इधर आना–जाना लगा रहता है बच्चा! वैसे भी वो बहुत शादियाँ करवाता है, सो लगभग सभी लोग जानते हैं उसे! निश्चिंत रहो, वो तुम्हारी भतीजी की भी शादी अच्छी जगह ही तय करायेगा!
आशीर्वाद दीजिए बाबा! लड़का देखने के चक्कर में जूते घिस गये हैं हमारे!
हहहह अबकी सब ठीक हो जायेगा बच्चा! वैसे लड़का कहाँ देखा है उसने?
मुकुंदपुर का ही है। कोई दीनानाथ तिवारी करके हैं, उन्हीं का बड़ा लड़का है!
दीनानाथ तिवारी!–साधु बाबा ने शांत स्वर में दोहराया!
जी!
उनका क्या पूछना! जमाना है उनका!
आप जानते हैं उन्हें!
उन्हें कौन नहीं जानता बच्चा! गाँव में सबसे ज्यादा जमीनों के मालिक हैं वे!
कुछ देर तक मौन छाया रहा! जाने साधु बाबा के मन में क्या चल रहा था!
कुछ अपने बारे में बताइये ना बाबा!–मैंने पूछा।
मेरा कौन सा घर संसार है बच्चा जो बताऊँ! आज यहाँ, कल वहाँ!
फिर भी, घर तो रहा ही होगा आपका भी! क्या कारण रहा होगा कि आपने छोड़ दिया!
साधु बाबा का चेहरा पीड़ा से भर गया!
छोड़ो भी, जो छोड़ दिया, उसके बारे में क्या बतियाना!
पर छोड़ा क्यों बाबा?
और कुछ नहीं, बस मैं ही कायर निकला रे!
मतलब!
मैंने खुद को ही छला बच्चा! सबको अपना समझते समझते भावुकता में इतना बह गया कि सबके लिए गैरों से भी गया गुजरा हो गया!
अभी आपका परिवार होगा कि नहीं?
क्या पता बच्चा, फिर उधर का कभी फेरा तो लगाया ही नहीं!
कभी उनके पास जाने का मन नहीं करता!
मन करेगा भी तो मैं क्या कर सकता हूँ बच्चा! अब लौटकर तो कुछ आने से रहा!
खुलकर बताइये ना बाबा! मैं सुनना चाहता हूँ!
हहहहहह जिन्हें सुनना चाहिए था, काश कि वे सुन लिए होते तो आज मैं कुत्ते सी दुर दुर वाली जिंदगी तो नहीं जीता! खैर! जब जनम देने वालों ने न्याय नहीं किया तो औरों से क्या शिकायत!
मतलब, आपके माँ–बाप! नहीं! विश्वास नहीं होता!
किसी को नहीं होगा बच्चा! पर कभी कभी माँ–बाप की नजरें भी अपनी संतानों के लिए भिन्न भिन्न हो जाती हैं! मेरा हमेशा से चुप रहना, जो जैसा कहे, वैसा करते जाना! यही भारी पड़ गया, मुझपर भी, और मेरी बीवी और बच्ची पर भी! भाइयों को भी एक बिना मोल का गुलाम मिल गया था!
विश्वास नहीं होता कि अपने भी ऐसे करते हैं बाबा!
बुरे से बुरा बस अपने अपने ही कर सकते हैं बच्चा, गैर नहीं! मैं चुप, मेरी बीवी चुप! बस दिन रात बैल की तरह खटना! सारे काम हमारे जिम्मे और घर की संपत्ति उनकी! मैं कुछ कह तो सकता नहीं था सो चुपचाप एक रात घर छोड़ दिया!
और बीवी– बच्ची?
फिर बाबा ने चुप्पी साध ली!
मैंने लाख कुरेदा, पर उन्होंने मुँह नहीं खोला!
मैंने भी आगे बोलना ठीक नहीं समझा!
थोड़ी देर बाद मेरी भी आँख लगी!

नींद खुली तो कोठरी में बाबा का अता–पता नहीं था! मेरे अचरज का ठिकाना नहीं रहा!
शाम हो चुकी थी। मैंने भी मुकुंदपुर की राह ली!
रात को मैं अवध तिवारी के साथ दीनानाथ जी के घर खाना खा रहा था! वे बढ़–चढ़कर उनका बखान कर रहे थे!
तभी मेरी नजर उनके घर से लगे एक कच्चे मकान की तरफ उठ गयी!
ये भी इनके ही हिस्से में है!–अवध तिवारी ने बताया!
मुझे खटका हुआ!
उस कच्चे मकान के दरवाजे से एक बूढ़ी महिला बड़ी सावधानी से बाहर झांक रही थी!
रुकिये! मैं आता हूँ!
दोनों का मुँह काला पड़ गया!
जैसे ही मैंने मकान में प्रवेश किया, सामने दीवाल पर टंगी एक पुरानी फोटो देखकर ठिठक गया!
ये....ये! लगता है इन्हें कहीं देखा है!
ये अब कहाँ दिखेंगे बबुआ! इनको तो मरे हुए कई साल हो गये!
अचानक मैं आसमान से गिरा!
अरे नहीं! इनके जैसे ही एक साधु से तो मैं आज ही मिला हूँ! बस दाढ़ी–मूँछ का फर्क है!
महिला के होठों से रुलाई फूट पड़ी!
आप जेठजी के लड़के को देखने आये हैं ना! बहुत बढ़िया है, विवाह तय कर लीजिए!
वो तो बाद की बात है! पर वे कह रहे थे कि आपके एक बच्ची भी थी!
अब नहीं है बबुआ! ऐन शादी के दिन उसकी बारात लौट गयी थी। बिचारी सदमा बर्दाश्त नहीं कर सकी और फाँसी लगाकर जान दे दी!
अरे! पर इन्होंने कुछ नहीं किया!–मैंने तस्वीर की तरफ इशारा किया!
इन्होंने कुछ किया होता तो आज हमारी ये दुर्दशा ही क्यों होती बबुआ! पहले तो अपने माँ–बाप और भाई से दुखी होकर घर छोड़ दिया। फिर आगे जाने क्या हुआ कि एक रात सीवान में कुंए में कूदकर जान दे दी! आप आये होंगे तो रास्ते में एक छोटा बगीचा पड़ा होगा! मेरी बच्ची की बारात इसीलिए वापस लौटी थी, क्योंकि लड़के वालों को इनकी असलियत पता चल गयी थी!
मेरा दिमाग भांय भांय करने लगा–अरे!और आपके जेठजी ने कुछ नहीं किया?
वो भला क्यूं कुछ करते! बैठे–बिठाये एक हिस्सा जो मिल रहा था!
अरे! आप खाना बीच में छोड़कर यहाँ क्यों चले आये!
अचानक पीछे से अवध तिवारी की घबराई आवाज सुनायी पड़ी! दीनानाथ बेचैन नजर आ रहे थे!
मैं तो बस इनसे मिलने चला आया! सोचा, घर की कोई बुजुर्ग महिला हैं तो पैर छू लूँ!
पर यहाँ तो कोई नहीं है!–अवध तिवारी की आवाज कांप गयी!
मैं झटके से पलटा!
दूर दूर तक उस वृद्ध महिला का अता–पता नहीं था!
चलिये, शायद मुझे ही भ्रम हुआ था!–मैंने प्रत्यक्षतः कहा! पर सारी कहानी साफ हो चुकी थी!
अगली सुबह अवध तिवारी और दीनानाथ मुझे गाँव के बाहर छोड़ने आये!
तो हम बात पक्की समझें!–दीनानाथ ने हल्के से पूछा!
मैं चुप रहा!
जाकर भाईसाहब से बात कर लीजिएगा! लड़की यहाँ राज करेगी!–अवध तिवारी ने मेरा हाथ जोरों से दबाया!
हाँ, जैसे इनके भाई की पत्नी ने राज किया!–मैंने अवध तिवारी के कान में सरगोशी की!
उनका चेहरा एक ही क्षण में काला पड़ चुका था!

तर्पण

साहित्यिक विभूति : दादा चन्द्रिका प्रसाद कुशवाहा

– दिनेश 'उन्नावी'

उत्तर प्रदेश के जनपद–उन्नाव की माटी न केवल वीर प्रसूता अपितु साहित्य प्रसूता भी है। जनपद–उन्नाव कलम, कृपाण व कोपीन की धरती के रूप में विगत लम्बे अरसे से सुप्रसिद्ध है। यहाँ एक से बढ़कर एक सिद्ध संतो, शूर वीरों एवं साहित्यकारों ने जन्म धारण किया है। हिन्दी साहित्यकाश के जाज्ल्यमान नक्षत्रों में पं. प्रताप नारायण मिश्र, कृष्णायन के रचयिता पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन', पं. जगदम्बा प्रसाद मिश्र 'हितैषी' तथा गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' आदि प्रमुख है।

इसी साहित्योर्वर उन्नाव जनपद के वि.क्षे.– बिछिया के ग्राम–पड़री खुर्द में सुभद्रा देवी–मन्नूलाल कुशवाहा दम्पत्ति के घर पौष शुक्ल– 11, सम्वत्–1997, तदनुसार 9 जनवरी 1941 ई. को जब एक बालक ने जन्म लिया तो किसे पता था कि वयस्क होने पर यह एक सुयोग्य शिक्षक व एक वरेण्य साहित्यकार के रूप में ख्याति अर्जित करेगा। माता–पिता ने इस बालक को भगवती चन्द्रिका देवी का प्रसाद माना तथा नाम दिया– चन्द्रिका प्रसाद कुशवाहा, जिसकी साहित्यिक चंद्रिका से कालांतर में साहित्याकाश आलोकित हो उठा।

श्री चंद्रिका प्रसाद कुशवाहा के पिता जी एक सीमांत कृषक थे। अस्तु इनका बचपन व प्रारम्भिक जीवन आर्थिक अभाव में गुजरा। प्राथमिक शिक्षा पड़री खुर्द की पाठशाला से सम्पन्न हुई तथा जू0हाई–स्कूल और हाईस्कूल की शिक्षा पड़री कलॉ उन्नाव से प्राप्त की। इण्टरमीडिएट स्तर की शिक्षा एम.आर.आर.एस. इण्टर कालेज पुरवा, उन्नाव से हुई। वर्ष 1961 में अप्रशिक्षित अध्यापक के रूप में प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हुए और 1967 में एच.टी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त करके स्थायी शिक्षक के रूप में प्राथमिक शिक्षा में ही आ गये। बी.ए. और एम.ए. (संस्कृत साहित्य) की उपाधियाँ व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में अर्जित कीं।

श्री कुशवाहा अध्यापन के साथ ही स्वाध्याय में निरंतर रत रहे। वेदों, उपनिषदों एवं पुराणों का गहन अध्ययन किया। संस्कृत वाङ्गमय के समर्पित स्वाध्यायी होने के कारण आपने कई सुविख्यात संस्कृत ग्रन्थों का हिन्दी काव्यानुवाद किया। आपका यह कार्य साहित्य जगत में मील का पत्थर साबित हुआ। इसी महनीय कार्य के लिए उ. प्र. हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा **वर्ष–2018 में 'साहित्य भूषण'** सम्मान से अलंकृत किये गये।

श्री चन्द्रिका प्रसाद कुशवाहा द्वारा रचित व संपादित साहित्यिक कृतियाँ निम्नवत् हैं–

क्रमांक	साहित्यिक कृति	विधा	प्रकाशन वर्ष	मूलकृति की भाषा
1.	चाणक्य नीति	हिन्दी काव्यानुवाद	2002 ई.	संस्कृत
2.	भर्तुहरि नीति शतकम्	हिन्दी काव्यानुवाद	2011 ई.	संस्कृत
3.	सौंदर्य लहरी	हिन्दी काव्यानुवाद	2014 ई.	संस्कृत
4.	फाग बसन्त बहार	संपादित/संकलित	17 फरवरी 2015 ई.	पूर्व से प्रचलित फाग गीत
5.	अवधी संस्कार गीत	संकलित	अगस्त, 2015 ई.	पूर्व से प्रचलित हिन्दू संस्कार गीत
6.	111 उपनिषदीय शब्दो के संदर्भ	संकलित एवं व्याख्यायित	2019	संस्कृत

उक्त वर्णित साहित्यिक सेवा के अतिरिक्त श्री कुशवाहा ने शिक्षा दान देकर लम्बी अवधि तक समाज की सेवा की है। अपने गाँव पड़री खुर्द में आप विद्यार्थियों को शाम को निःशुल्क पढ़ाते रहे हैं, वह भी लालटेन की रोशनी में, क्योंकि गाँव में तत्समय विद्युतीकरण हुआ ही नहीं था। हालांकि आज हो गया है किन्तु अब अति वृद्धावस्था में उनकी नयन ज्योति पर्याप्त नहीं बची। गरीब कन्याओं के विवाह में भी यथाशक्ति आर्थिक मदद देने की उनकी प्रवृत्ति रही।

साहित्यिक चेतना के प्रसार तथा नैतिक व मानवीय मूल्यों के क्षरण से समाज को बचाने के लिए अपने गाँव में कई विराट कवि सम्मेलन कराए। इन आयोजनों में अधिकांश पैसा उन्हीं का व्यय होता रहा। गाँव व क्षेत्र के लोग आर्थिक सहयोग देते रहे किन्तु यह अपर्याप्त होता था।

इसी 08 अप्रैल 2023 ई0 दिन शनिवार को प्रातः साढ़े आठ बजे जब गुरूवर चन्द्रिका प्रसाद जी गोलोकवासी हुए तो उनके सुपुत्र चन्द्रकांत ने मुझे दूरभाष पर यह हृदय विदारक सूचना दी और कहा, ''चाचाजी ! आप जल्द आ जाइए'', तो मेरे पैरों के नीचे से जैसे जमीन ही खिसक गई। उन्नाव में वे मेरे संरक्षक थे। मैं अपनी मानसिक वेदना को शब्दों में व्यक्त कर पाने में पूर्णतः असमर्थ हूँ। ऐसे समर्थ साहित्यकार का गोलोकवासी होना वाकई दुखद है। जन मानस से मेरा विनम्र अनुरोध है कि दिवंगत श्रेष्ठ साहित्यकार की सद्गति के लिए तथा उनके परिजनों को इस असह्य वज्रपात को सहन कर सकने की शक्ति प्रदान करने के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करें।

शत्–शत् नमन! !!ऊँ शांति!!

(लघुकथा)

निरुत्तर

– शैलेन्द्र त्रिवेदी

सम्पर्क सूत्र : 9452516881

डैड! डैड!! अब आप माली के लड़के से बात नहीं करना। बच्चे ने भाषा विभाग में हिन्दी अधिकारी पिता से शिकायत भरे लहजे में कहा।

क्यों बेटा! पिता ने बेटे को दुलारते हुए पूँछा। डैडी, वह बहुत गन्दा है गन्दी बात करता है। कौन सी गन्दी बात करता है बेटा?

वह अपनी माँग को अम्मा और डैड को बापू कहता है।

अच्छा डैड! अम्मा–बापू गन्दी बात होती है न?

नहीं बेटा गन्दी बात नहीं होती। मॉम को हिन्दी में अम्मा और डैड को हिन्दी में बापू कहते है।

तो डैड क्या हम लोग हिन्दी नहीं बोलते हैं? बेटा हिन्दी ही बोलते हैं। तो हम आप लोगों को अम्मा–बापू क्यों नहीं कहते?

हिन्दी अधिकारी पिता के पास बेटे के प्रश्न का कोई उत्तर न था।

प्रेम, सत्य-शिव-सुंदरम, प्रेम सृष्टि आधार।
प्रेम बिना संसार में, शेष न कुछ भी सार। – कवि ब्रजेश

सफलता की कुंजी : उद्यम

– राकेश वर्मा
सहायक शिक्षक
इण्टर कालेज, थाना

उद्यम से ही कार्य सफल होते हैं, ना कि मनोरथों से ठीक उसी प्रकार सोए हुए शेर के मुख में हिरण नहीं आते। ये पंक्तियां हम सभी ने स्कूल के दिनों में पढ़ी होंगी। ये उक्ति पुरानी जरूर है लेकिन इसका महत्व आज भी उतना ही है, जितना की एक हजार साल पहले था। हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं जो भाग्य का रोना रोते रहते हैं और कठिन परिश्रम नहीं करते। किसी काम में सफल होने के लिए जरूरी प्रयास नहीं करते, शायद ऐसे ही व्यक्तियों के लिए ये पंक्तियाँ लिखी गई हैं।

लोग भाग्य और परिश्रम को अलग –अलग मानते हैं। इसीलिए ऐसी कहावत कहते फिरते हैं कि भाग्य में होगा तो सबकुछ मिल जाएगा और भाग्य में नहीं तो कुछ भी नहीं मिलेगा क्योंकि वो आने वाले भविष्य को मुंगेरी लाल के हसीन सपनों की भाँति ही देखते हैं। ऐसे लोग किसी कार्य में परिश्रम करने से ज्यादा भाग्य के बारे में सोचते रहते हैं। उनको लगता है कि जब किस्मत पलटेगी तो उनकी जिंदगी एकाएक पलट जाएगी। लेकिन सच्चाई तो यह है कि ऐसे लोगों का आधा समय तो किस्मत के बारे में सोचने में ही निकल जाता है। जबकि मेहनत करने वाला व्यक्ति लगन के साथ परिश्रम करने से आगे निकल जाता है। साधना भी दृढ़ता व संयम के साथ ही संभव है, जिसमें व्यक्ति अपनी इन्त्रियों पर नियंत्रण कर काम, क्रोध , लाभ को त्यागकर अपने आपको पहचानते हुए स्वयं का विस्तार करता है और भीतर की दीवारों को तोड़कर ऊर्जा को सार्थक प्रयासों से सकारात्मक सोच के साथ विस्तार देता है।

पर्यावरण संरक्षण हमारी संस्कृति का अंग है।पर्यावरण संरक्षण के निमित्त आमजन का सहयोग अनिवार्य हो गया है। आज मानव को हरित मानसिकता विकसित करने की आवश्यकता है। दैनिक कार्यों में प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग किया जाए, ताकि पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सके। घरों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों को अलग–अलग वर्गों में विभाजित किया जाना चाहिए। किसान जैविक खेती करें। कम से कम उर्वरक व कीटनाशकों का प्रयोग किया जाए। प्रत्येक व्यक्ति अपने आसपास गमलों में छोटे–छोटे पौधे लगाएं। कम बिजली, कम पानी, कम गैस का प्रयोग कर कोई भी व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण में महती भूमिका निभा सकता है। प्रदूषण रोकने के लिए जलाऊ लकड़ी का उपयोग कम करना जरूरी है, जिसके लिए विद्युत शवदाह गृहों का उपयोग करना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए कम दूरी तय करने के लिए साइकिल एवं अधिक दूरी तय करने के लिए सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करें। आमजन पर्यावरण अनुकूल वस्तुओं का उपयोग करे, अपने घरों के आस–पास पेड़ लगाए। वर्षा के जल को संरक्षित किया जाए। नदियों, तालाबों को प्रदूषित होने से बचाना जरूरी है। इस तरह के प्रयास वर्ष भर होने चाहिए।पर्यावरण संरक्षण के लिए हम टिकाऊ विकास पर बल दें। सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध का कड़ाई से पालना हो। आमजन स्वयं आगे आकर इनके स्थान पर कपड़े या पेपर बैग प्रयोग में लाएं। हम अधिक से अधिक पौधे लगाएं एवं कचरे का उचित एवं उपयुक्त स्थान पर निस्तारण करें। पर्यावरण हितैषी जीवनशैली अपनाएं।

हमारे देश में वैदिक काल से ही प्रकृति के साथ दैवीय भाव से जुड़कर पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन की सुदीर्घ परम्परा रही है। नदी ,पर्वत ,पेड़ पौधे, पशु–पक्षी सभी के साथ हमारा समाज तादात्म्य भाव के साथ रहता था परंतु विकास की इस मदान्ध दौड़ ने सभी क्षेत्रों में पर्यावरण की अपूरणीय क्षति की है। कोविड–19 के दौरान हम सभी ने ऑक्सीजन एवं जीवन के लिये संघर्ष देखा है। घुटती साँसे, कहीं अतिवृष्टि कहीं अनावृष्टि ,कहीं सूखा, बढ़ता तापमान यह सभी इस बात का संकेत कर रहे है कि प्रकृति के साथ अपने व्यवहार में परिवर्तन करना चाहिए अन्यथा विकास को विनाश बनने में देर नहीं लगेगी।पर्यावरण संरक्षण सिर्फ सरकारों या कुछ संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं है अपितु यह संपूर्ण समाज की जिम्मेदारी है। एक बड़ा जन आंदोलन हर लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। हमें नई पीढ़ी ,खास तौर पर युवाओं को प्रेरित कर पर्यावरण संरक्षण की मुहिम में भागीदारी सुनिश्चित करानी होगी। यदि अपने प्रियजनों के जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ या पुण्यतिथि पर केवल एक पौधा लगाकर उसके पालन पोषण का संकल्प ले लिया जाए तो काफी हद तक पर्यावरण को बचाया जा सकता है।दैनिक जीवन में पॉलिथीन की थैली की जगह कपड़े का थैला इस्तेमाल करना चाहिए। जब भी किसी को तोहफा दें, तो पौधा या बीज का पैकेट दें, कृत्रिम फूल नहीं। प्लास्टिक के बर्तनों की बजाय पत्तों से तैयार पत्तल का उपयोग करना चाहिए। साइकिल का भी प्रयोग करें। फल और सब्जियों के छिलके या चाय पत्ती को फेंकने की बजाय बगीचे में खाद के तौर पर इस्तेमाल करें।वर्तमान में किए गए इन छोटे–छोटे प्रयासों से ही भविष्य में भावी पीढ़ी पर्यावरण से लाभान्वित हो पाएगी और आमजन की सहभागिता नहीं मिली तो यह वैश्विक स्तर पर आयोजित किए जाने वाले पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रम मात्र औपचारिकता ही रह जाएंगे।

किसी भी राष्ट्र की समुन्नति में उसके अनुशासित नागरिकों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। राष्ट्र हमारा है उसकी सम्पत्ति हम सबकी है उसका संरक्षण हम सभी का दायित्व है। लोकतंत्र में सिर्फ अधिकार नहीं अपितु कर्तव्य भी होते हैं इस बात का बोध होना सभी के लिए आवश्यक है ।आंदोलनों ,रैलियों ,दंगों में जिस तरह से क्षति भीड़ द्वारा की जाती है वह निराशाजनक है। विशेषतयः गाँधी के देश में जहाँ पर शांति, अहिंसा से अपनी बात सत्ता से कहने की परम्परा रही हो। सार्वजनिक संपत्ति के संरक्षण के कठोर कानूनों से ज्यादा प्रासंगिक है। लोगों के अंदर यह भावना पैदा करना कि यह सम्पत्ति सरकार की नहीं बल्कि हम सब की है। सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता ,अपनी धरोहरों के संरक्षण में कई पाश्चात्य देशों ने अनुकरणीय उदाहरण पेश किए हैं।हम नागरिकों को जागरूक कर एवम उनके सहयोग से ही सार्वजनिक सम्पत्तियों की रक्षा कर सकते हैं। आज जरा जरा सी बात पर आंदोलन करना आम बात है। जिसमें अपनी जरूरी व गैर जरूरी माँगों को लेकर हिंसात्मक रुख अपना सार्वजनिक संपत्ति की तोड़ फोड़ व आगजनी आम हुई है जो निःसंदेह राष्ट्र के उत्थान में कहीं न कहीं बाधक है। सार्वजनिक संपत्ति हमारी संपत्ति है और हम इसकी सुरक्षा के लिए जिम्मेदार है जब ये सोच हमारे दिल और दिमाग में विकसित हो जाएगी। तब हम सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा कर राष्ट्र को सहयोग कर रहे होंगे जो बेहद आवश्यक है। भारत की आजादी के लिए 1857 से 1947 के मध्य जितने भी प्रयत्न हुए उनमें स्वतंत्रता का सपना संजोए क्रांतिकारियों और शहीदों की उपस्थिति सबसे अधिक प्रेरणादाई सिद्ध हुई। मातृभूमि की सेवा और उसके लिए मर मिटने की जो भावना उस समय थी ,आज उसका नितांत अभाव हो गया है। प्लासी के युद्ध सन 1757 से गोवा मुक्ति सन 1961 के साथ ही भारत पूर्ण रूप से स्वाधीन हो सका। भारतीय स्वतंत्रता के सशस्त्र संग्राम की विशेषता यह रही कि क्रांतिकारियों के मुक्ति प्रयास कभी शिथिल नहीं हुए। भारत की स्वतंत्रता के बाद आधुनिक नेताओं ने भारत के सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलनों को प्रायः दबाते हुए उसे इतिहास में कम महत्व दिया गया और कई स्थानों पर उसे विकृत भी किया गया। स्वराज्य उपरांत यह सिद्ध करने की चेष्टा की गई कि हमें स्वतंत्रता केवल एक विशेष राजनीतिक दल के अहिंसात्मक आंदोलन के माध्यम से मिली।

जिससे इस विकृत इतिहास में स्वाधीनता के लिए प्राण उत्सर्ग करने वाले सर्वस्व समर्पित करने वाले असंख्य क्रांतिकारियों हुतात्माओं की पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई।

उनकी तुरबत पर नहीं है एक भी दीया,
जिनके खूँ से जलते हैं ये चिरागे वतन।
जगमगा रहे हैं मकबरे उनके,
बेचा करते थे जो शहीदों के कफन।

जिन शहीदों के प्रयत्नों व त्याग से हमें स्वतंत्रता मिली उन्हें उचित सम्मान नहीं मिला। अनेकों को स्वतंत्रता के बाद भी गुमनामी का अपमान जनक जीवन जीना पड़ा। हमें आज फिर जाति, धर्म व दलीय आस्था से ऊपर उठते हुए अपनी गलतियों से सीखकर नए भारत की स्पष्ट तस्वीर संपूर्ण विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए त्याग ,बलिदान के लिए तत्पर होते हुए एक ही विचार व लक्ष्य बनाना है कि राष्ट्र सर्वोपरि है।

भारत की स्वतंत्रता अनगिनत बलिदानों का प्रतिफल है । इस स्वतंत्रता समर के यज्ञ कुंड की समिधा में जो शीश आहुत किए गए वह जाति, धर्म, प्रान्तीयता, भाषायी बंधनों से विमुक्त हो हम सब भारतीय हैं की मंगलकामना के साथ आए। स्वतंत्रता का स्वप्न देखने वालों के सपनों का भारत बनाना एक विराट चुनौती है। आज भी देश के समक्ष अनेकों विकट समस्याएं मुँह बाए खड़ी हैं। जब हम प्रांतीयता, जातीयता, धार्मिकता में फँसकर आपसी सौहार्द को नष्ट करने पर तुल जाते हैं। तब गाँधी, नेहरू, सुभाष, आजाद, बिस्मिल के बताए पथ का अनुसरण हमें करना चाहिए। राष्ट्र का संविधान कहता है। 'हम भारत के लोग' तो आपसी सौहार्द एवं बन्धुत्व बनाये रखना हम सबकी महती जिम्मेदारी है।

राष्ट्र के समक्ष खड़ी चुनौतियों का सामना सिर्फ सरकारी प्रयासों या कुछ संस्थाओं द्वारा नहीं अपितु जन आंदोलन के माध्यम से करना चाहिए। चुनौती कितनी भी बड़ी क्यों न हो, जन सहभागिता से उसे आसानी से परास्त किया जा सकता है। जिस प्रकार आजादी की लड़ाई अनेक संगठनों एवं विचारधाराओं ने अपने अपने तरीके से सहभागिता करके अंततः एक लक्ष्य की प्राप्त की थी। उसी तरह प्रत्येक देशवासी को जिस तरह से भी वह सेवा कर सकता है राष्ट्र हित के लिए उसे करना चाहिए। राष्ट्र प्रथम है यह उसका ध्येय भी होना चाहिए। प्रत्येक भारतीय को यह ध्येय धारण कर राष्ट्र निर्माण में अपनी महती भूमिका सुनिश्चित करनी चाहिए।

आदर्श नगर पंचायत रसूलाबाद, उन्नाव की तरफ से ''अभ्युदय सेवा संस्थान'' द्वारा आयोजित सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

नगर पंचायत आपसे निम्न अपेक्षाएं करती है

१. जन्म-मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करायें। २. नगर आपका है इसे स्वच्छ बनाने में सहयोग दें।
३. नालियों में कूड़ा व पॉलीथीन न डालें। ४. कूड़ा निर्धारित कूड़ेदान में ही डालें।
५. जलकर व गृहकर की आदायगी समय पर करें। ६. शुष्क शौचालयों को जल प्रवाहित शौचालयों में परिवर्तित करवा लें।
७. पॉलीथीन का विक्रय उपयोग प्रतिबन्धित है, दोष सिद्ध होने पर कारावास व जुर्माना हो सकता है। ८. जल ही जीवन है नल की टोटी खुली न छोड़े।

रसूलाबाद नगर पंचायत में विकास के आयाम

राजकीय बीज भण्डार का निर्माण, बारातशाला, कान्हा गौशाला, आसय कॉलोनी, लाइब्रेरी का निर्माण
तालाबों का सौन्दर्यीकरण, शेष आबादी का विद्युतीकरण
सीमा विस्तार, मार्गों में स्ट्रीट लाइट जनरेटर की व्यवस्था
पेयजन के लिए आर.ओ. कूलर, व पानी की छोटी टँकियाँ
मुख्य मार्ग का निर्माण व चौड़ीकरण

नगर पंचायत के बहुमुखी विकास व जरूरतमंद बेसहारा लोगों की मदद के लिए हर पल तत्पर रहकर आप सबके मार्ग दर्शन सहयोग व आशीर्वाद के साथ सेवा के लिए कृत संकल्पित हूँ।

मुकेश कुमार मिश्रा
अधिशाषी अधिकारी
नगर पंचायत-रसूलाबाद

श्रीमती गज़ाला नईम
अध्यक्ष
अध्यक्ष-प्रतिनिधि- नईमुद्दीन अंसारी
नगर पंचायत-रसूलाबाद

अजय श्रीवास्तव

जय इण्टरप्राइजेज

Email : a.unnao@rediffmail.com

✓स्कूल टाई + बेल्ट
✓ टी-शर्ट व स्वेटर
✓क्लाथ मोनोग्राम
✓परिचय पत्र
✓स्कूल डायरी

✓ मैगजीन
✓ प्रास्पेक्टस
✓ आफसेट प्रिटिंग
✓ फोर कलर प्रिटिंग

69, बन्दूहार (निकट गोपेश्वर मन्दिर) उन्नाव :9793092999

ओम-प्रकाश
अधिशाषी अधिकारी
उन्नाव

कार्यालय नगर पालिका परिषद, उन्नाव

सातवाँ अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के आयोजन
व अभ्युदय वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन पर
देशवासियों/प्रदेशवासियों/नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

नगर पालिका परिषद, उन्नाव द्वारा नागरिकों को निम्न सुविधायें उपलब्ध कराई जा रही हैं।

नागरिकों से अपील

स्वच्छ सर्वेक्षण-२०२३ के अन्तर्गत नगर क्षेत्र की साफ-सफाई (सड़कों/गलियों/नाला-नालियों की नियमित सफाइ/ सिल्ट निस्तारण /डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन/व्यक्तिगत/सार्वजनिक/सामुदायिक शौचालयों का निर्माण आदि) एवं उ०प्र० राज्य ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की नीति के तहत प्लास्टिक के बैगों का उत्पादन विक्रय और उपयोग को पूर्णत: प्रतिबन्धित कर दिया गया है। सभी दुकानदारों थोक विक्रेताओं, ठेलावालों, फेरीवालों, फलवालों सब्जीवालों सहित आम-जनमानस से अपील है कि-

- किसी भी प्रकार के प्लास्टिक/थर्माकोल के बैग, गिलास, कप, प्लेट, थाली आदि का प्रयोग स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की दृष्टि से हानिकारक है। इसलिये इसका प्रयोग कदापि न करें।
- प्लास्टिक/थर्माकोल के बैग, गिलास, कप, प्लेट, थाली आदि प्रतिबंधित कर दिये गये है। इसका विक्रय व उपयोग वर्जित है।
- प्लास्टिक/थर्माकोल के बैग, गिलास, कप, प्लेट, थाली आदि के स्थान पर कपड़े, कागज आदि का प्रयोग मानवहित व स्वास्थ्य पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।
- कोई भी दुकानदार थोक विक्रेता, ठेलावालों, फेरीवालों, फलवालों, सब्जीवालों सहित आम जनमानस द्वारा प्लास्टिक/ थर्माकोल के बैग, गिलास, कप, प्लेट, थाली आदि का प्रयोग करते हुए पाये जाने पर उ०प्र० राज्य ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन की नीति के तहत नियमानुसार जुर्माना लगाया जायेगा।
- घर अथवा दुकान में जनित (Generate) होने वाले गीला एवं सूखा कूड़ा को अलग-अलग डस्टबीन में एकत्र करें।
- नगर को स्वच्छ रखने के लिए कूड़े को नगर पालिका द्वारा अधिकृत घर-घर से कूड़ा एकत्र करने वाले पालिकाकर्मी को ही दें। कूड़े को किसी भी दशा में नाले/नाली, सड़क अथवा खुले स्थान में न फेकें और न ही जलाएं। कूड़ा खुले में फेकने से गंदगी होती है जो दण्डनीय अपराध है।

डेंगू और मलेरिया से बचाव हेतु उपाय

१. अपने घर के आसपास एवं नालियों में पानी न जमा होने दें तथा पानी से भरे गड्ढों में मिट्टी भर दें
२. पानी के बर्तनों, टंकियों आदि को ढक कर रखें। ३. सोते समय कीटनाशक से उपचारित मच्छरदानी का उपयोग करें।
४. हैण्डपम्प के आसपास सीमेन्ट से पक्का फर्श व नाली बनवायें। किसी भी स्थिति में कीचड़ व गंदगी न होने पाये।
५. कूलर, पशु-पक्षियों के बर्तन, हौदी (चरही), फ्रिज की टे, फूलदान इत्यादि प्रत्येक सप्ताह खाली करें व धूप में सुखाकर प्रयोग करें।
६. यदि कपकपी के साथ अचानक सिरदर्द व तेज बुखार एवं बार-बार पसीना आने, मांसपेसियों में दर्द होना, आँखों के पीछे दर्द होना, जी मिचलाना या उल्टी होना, नाक-मुँह-मसूड़ों से खून आना, त्वचा पर चकते उभरना आदि लक्षण डेंगू/मलेरिया के हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में चिकित्सक से सलाह लेकर उपचार करायें।

(ओम प्रकाश)
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका परिषद, उन्नाव

(श्वेता मिश्रा)
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद, उन्नाव

-: माननीय समस्त सदस्यगण :-

श्रीमती किरन, श्री शिव वीरेन्द्र कुशवाहा, श्री राकेश कुमार, श्रीमती प्रेमा, श्री राजेन्द्र भारतीय, श्रीमती मीरा देवी आर्या, श्रीमती सियादुलारी, श्री रवि कुमार, श्री दिलशाद, श्री निशेष कुमार जायसवाल, श्रीमती शिवकुमारी, श्रीमती गुड़िया सिंह, श्री ओमेन्द्र प्रताप सिंह, श्री सुशील तिवारी, श्री मनोज कुमार, श्रीमती हिना, श्री ब्रजेश पाण्डेय, श्रीमती लक्ष्मी देवी, श्री सतीश यादव श्री मोहम्मद फहद, श्री अमित सिंह, श्रीमती करूणा, श्रीमती स्वप्निल, श्री दीपक, श्रीमती रीता सिंह, श्री दिनेश कुमार श्री अशोक कुमार सिंह, श्री यासीन अहमद, श्रीमती नीलम, श्री मेराजुद्दीन, श्री अरफात बेग, श्रीमती रूकैय्या बेगम।

प्रातः स्मरणीय पिता श्री स्मृतिशेष डॉ. एस.के. श्रीवास्तव (बनारस) एवं
माता श्री स्व. सर्व रंजनी श्रीवास्तव (बनारस) के चरणों में नमन करते हुए हम-

अभ्युदय सेवा संस्थान

द्वारा

सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं चतुर्थ वार्षिक पत्रिका अनामिका के प्रकाशन पर अपनी अशेष मंगलकामनाएं प्रेषित करते हैं।

डॉ. मनोज श्रीवास्तव

विभागाध्यक्ष
अर्थशास्त्र विभाग डी.ए.वी. कालेज, कानपुर
संरक्षक : ''अभ्युदय सेवा संस्थान''
''आचमन''
''उन्मुख संस्था''
चन्द्रशेखर आजाद युवा संगठन उ.प्र.
भारत विकास परिषद चन्द्रशेखर आजाद शाखा-उन्नाव
अखिल भारतीय साहित्य परिषद-उन्नाव

वंशज श्रीवास्तव

वन्दना श्रीवास्तव

अध्यक्ष : डान बास्को एजूकेशनल सोसायटी, कल्याणी देवी रोड-उन्नाव
उपाध्यक्ष : डिवाइन मिशन स्कूल ट्रस्ट

आदर्श नगर पंचायत सफीपुर, उन्नाव की तरफ से ''अभ्युदय सेवा संस्थान'' द्वारा आयोजित सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

नगर पंचायत आपसे निम्न अपेक्षाएं करती है

१. जन्म-मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करायें। २. नगर आपका है इसे स्वच्छ बनाने में सहयोग दें।
३. नालियों में कूड़ा व पॉलीथीन न डालें। ४. कूड़ा निर्धारित कूड़ेदान में ही डालें।
५. जलकर व गृहकर की आदायगी समय पर करें। ६. शुष्क शौचालयों को जल प्रवाहित शौचालयों में परिवर्तित करवा लें।
७. पॉलीथीन का विक्रय उपयोग प्रतिबन्धित है, दोष सिद्ध होने पर कारावास व जुर्माना हो सकता है। ८. जल ही जीवन है नल की टोटी खुली न छोड़े।

सफीपुर नगर पंचायत में विकास के आयाम

राजकीय बीज भण्डार का निर्माण, बारातशाला, कान्हा गौशाला, आसय कॉलोनी, लाइब्रेरी का निर्माण
तालाबों का सौन्दर्यीकरण, शेष आबादी का विद्युतीकरण
सीमा विस्तार, मार्गों में स्ट्रीट लाइट जनरेटर की व्यवस्था
पेयजल के लिए आर.ओ. कूलर, व पानी की छोटी टँकियाँ
मुख्य मार्ग का निर्माण व चौड़ीकरण

नगर पंचायत के बहुमुखी विकास व जरूरतमंद बेसहारा लोगों की मदद के लिए हर पल तत्पर रहकर आप सबके मार्ग दर्शन सहयोग व आशीर्वाद के साथ सेवा के लिए कृत संकल्पित हूँ।

विनीत श्रीवास्तव
अधिशाषी अधिकारी
नगर पंचायत-सफीपुर

श्रीमती गरिमा बाजपेयी
अध्यक्ष
नगर पंचायत-सफीपुर

Recognized By
U.P. Govt. English Medium

Since : 2006

''अभ्युदय सेवा संस्थान''
द्वारा आयोजित अखिल भारतीय काव्य समारोह एवं स्मारिका के प्रकाशन पर

R.N. SINGH MEMORIAL PUBLIC SCHOOL

LEAD KINDLY LIGHT

Nanda Khera Unaao

Classes- Nursery to VIII

Director - **Pramendra Singh**
7007554055

Principal - **Manju singh**
7905258884

SISTER CONCERN :

Hotel The Meadows
Karowan Mod, Unnao

Brij Bhoomi
The Farm Nanda khera, Unnao

नगर पंचायत अचलगंज, उन्नाव की तरफ से ''अभ्युदय सेवा संस्थान'' द्वारा आयोजित सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

नगर पंचायत आपसे निम्न अपेक्षाएं करती है

१. जन्म-मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करायें। २. नगर आपका है इसे स्वच्छ बनाने में सहयोग दें।
३. नालियों में कूड़ा व पॉलीथीन न डालें। ४. कूड़ा निर्धारित कूड़ेदान में ही डालें।
५. जलकर व गृहकर की आदायगी समय पर करें। ६. शुष्क शौचालयों को जल प्रवाहित शौचालयों में परिवर्तित करवा लें।
७. पॉलीथीन का विक्रय उपयोग प्रतिबन्धित है, दोष सिद्ध होने पर कारावास व जुर्माना हो सकता है। ८. जल ही जीवन है नल की टोटी खुली न छोड़े।

अचलगंज नगर पंचायत में विकास के आयाम

राजकीय बीज भण्डार का निर्माण, बारातशाला, कान्हा गौशाला, आसय कॉलोनी
तालाबों का सौन्दर्यीकरण, शेष आबादी का विद्युतीकरण
मार्गों में स्ट्रीट लाइट जनरेटर की व्यवस्था
पेयजल के लिए आर.ओ. कूलर, व पानी की छोटी टँकियाँ
मुख्य मार्ग का निर्माण व चौड़ीकरण

अंकिता देवी
अधिशाषी अधिकारी
नगर पंचायत-अचलगंज

नगर पंचायत के बहुमुखी विकास व जरूरतमंद बेसहारा लोगों की मदद के लिए हर पल तत्पर रहकर आप सबके मार्ग दर्शन सहयोग व आशीर्वाद के साथ सेवा के लिए कृत संकल्पित हूँ।

लक्ष्मी वर्मा
अध्यक्ष
नगर पंचायत-अचलगंज

RED HILL SCHOOL

ENGLISH MEDIUM (CBSE PATTERN)

- DIGITAL CLASS ROOMS
- OUR SALIENT FEATURES
- Well Furnished Audio Visual Class Rooms
- Music and Dance Room. Art Craft Room
- Highly qualified Faculty

A.C Class Room for P.G. Class

- Fully CCTV Covered Campus
- Facility of Filter and Cold Water

Do pay to visit
"Red Hill Digi School"
for your child's future

Contact us : 9450769001, 8318435929
E-mail : redhilldigischool@gmail.com

अर्द्धनारीश्वर

– सिम्पी पटेल
निराला नगर, उन्नाव

अर्द्धनारीश्वर के चित्र को निहारते हुए बहुत से विचार मानस पटल पर गूँजने लगे। शिव और शक्ति के प्रतीक के रूप में। यह चित्र मुझे बहुत कुछ सोचने के लिए विवश कर रहा था। जब प्रकृति में महिला और पुरुष का अस्तित्व समान रूप से विद्यमान है एक दूसरे के लिये दोनों सम्मानीय हैं। इस सृष्टि के लिये दोनों ही अनिवार्य हैं तो फिर क्यों सदियों से तमाम रूढ़ियों के बंधनों में जकड़ी हुई है यह शक्ति? गली, चौराहे, नुक्कड़ कहीं पर भी यदि दो पुरुष आपस में झगड़ा कर रहे हैं तो माँ, बहनों को संबोधित करते हुए क्यों पुरुष प्रधान के द्वारा गालियों की बौछार की जाती है? एक पुत्र की लालसा में यह शक्ति स्वरूपा तब तक भरूण में क्यों मरती है जब तक कि पुत्र की प्राप्ति न हो जाए? जब कि आज तक कोई ऐसा मामला सामने नहीं आया है कि पुत्री की प्राप्ति के लिए किसी ने जांच कराया हो।

नौकरी या किसी अन्य कार्य से बाहर जाती हुई बहू, बेटियाँ ही सुबह का नाश्ता बनायें ऐसा कहाँ तक तर्क संगत है? एक परिवार में एक दंपति के एक पुत्र और पुत्री के रूप में जुड़वा सन्तानें हैं, दोनों किशोर हैं, पढ़ाई के उपरान्त दोनों जब घर आते हैं तो माँ के साथ घर के अन्य कार्यों में किशोरी हाथ बंटाती है और किशोर स्पोर्ट आदि खेलने के लिए दोस्तों के साथ बाहर जाता है। अपने भारतीय व्रत उपवासों को ही ले लीजिए। कोई भी व्रत ऐसा नहीं निर्धारित है जो पुत्री के कल्याण के लिए घर के सदस्यों द्वारा रखा जाता हो यहाँ तक सन्तान सप्तमी का व्रत भी केवल पुत्र के लिए रखा जाता है तो क्या पुत्री सन्तान नहीं है और हाँ विचित्र तो तब लगता है जब अपने कल्याण के लिए नवरात्रि आने पर कन्या भोज कराया जाएगा। उसमें भी दुःखद यह लगता है भोज के लिए कन्याएं न मिलने पर किसी अन्य के घर में भर पेट खा चुकी कन्याओं को पकड़ पकड़ कर कुमारी खिलाया जाता है। हमारे देश का लिंगानुपात बहुत तेजी से गिर रहा है यह प्रकृति नहीं हम मानव कर रहे हैं। प्राकृतिक प्रक्रियाओं से इतनी छेड़छाड़ उचित नहीं है।

वैसे तो बहुत कुछ परिवर्तित हो चुका है पर महिलाएं पर, किन्तु, परन्तु, लेकिन जैसे शब्दों से हटकर शिक्षा, जागरूकता और आत्मचेतना से युक्त हों और खुद को आकर्षण की वस्तु न समझें।

लेख को लंबा करना मेरा उद्देश्य नहीं है। मुझे सिर्फ इतना कहना है कि स्त्री और पुरुष दोनों एक दूसरे का सम्मान करते हुए वास्तविक अर्थों में एक दूसरे के पूरक बनें।

विष पीने की होड़ मची है

विष पीने की होड़ मची है
तथाकथित सुकरातों में !

चेलों को आदेश दे दिया
जहाँ जहाँ मिल सके समेटो।
अपने विष को चले खोजने
सब के अपने अपने प्लेटो।

विषधर जान बचाते घूमें
लोग लगे हैं घातों में !

इधर उधर का वमन उठाकर
चेले जब बटोर कर लाये ।
तथाकथित सुकरातों ने फिर
मिलकर कई गिलास चढ़ाये।

कुछ उनके कृतित्व में दिखता
कुछ दिखता है बातों में !

सब के सब चिंतित हैं सबकी
खतरे में है प्रासंगिकता।
सब ने है दूकान सजा ली
थोड़ा बहुत माल भी बिकता।

गद्दी पर बैठे हैं सारे
विष चिपकाकर दाँतों में !

– ज्ञान प्रकाश आकुल

कोई गीत नहीं गाता है

कोई गीत नहीं गाता है,
गीत अधर का क्या नाता है?
जिसका जितना दर्द बड़ा है, वो उतना अच्छा गाता है।

सूना बाग सघन अँधियारी
आधी रात पपीहा गाये।
कहीं किसी का हृदय पिघल कर
आँखों मे आँसू बन जाये।

अश्रु नयन का क्या नाता है?
आँसू भीतर से आता है।
जिसमे जितनी बड़ी जलन है, वह उतना ही मदमाता है।
जिसका जितना दर्द बड़ा है, वो उतना अच्छा गाता है।

सबके नयन अनपढ़े होते
पढ़ी लिखी चितवन होती है।
कोई मधुर नहीं दुनियाँ में
मीठी सिर्फ छुअन होती है।

देह छुअन का क्या नाता है?
कोई बता नहीं पाता है।
जितना अपनापन बढ़ता है, उतना घूँघट उठ जाता है।
जिसका जितना दर्द बड़ा है,वो उतना अच्छा गाता है।

उफन–उफन कर चाँद हँसा तो
बिफर–बिफर कर चकवा रोया।
कोई गिने सितारे, कोई
मनचाही बाहों में सोया।

जगत , नियति क्या नाता है?
कोई जान नहीं पाता है।
जितनी जोर जलद रोता है, उतना सावन हँस जाता है।
जिसका जितना दर्द बड़ा है, वो उतना अच्छा गाता है।

– महेंद्रपाल सिंह

बड़े बड़े मंचों पर

– चंद्रेश शेखर

बड़े बड़े मंचों पर
कविता से ज्यादा
जब प्रहसन देखे !
तब से कागज कलम उठाकर
अलमारी में बंद कर दिया !!

हम तो कवि थे
पीड़ाओं को समाधान
तक लाने वाले !
हम जागरणों के संवाहक थे
प्रयाण–पद गाने वाले !!

हम कबीर कुल के वंशज थे
समरसता की साखी गाते !
हम माँ वाणी के आराधक,
थे जन–मन की भ्रान्ति मिटाते !!

लेकिन सिंधुसुता के
आकर्षण में
इतना मग्न हुए हम !
बने विदूषक घूम रहे हैं
कवि दिखना भी बन्द कर दिया!!.

हम कवि
सुकरातों के साथी,
सच कहते थे, विष पीते थे !
हम विदेह औरों के सुख में
हँस लेते थे, दुःख जीते थे !!

हमने मीरा के पद्यों में
अहा ! प्रेम के गौरव गाये !
हम कवियों ने
समय–समय पर
देश–प्रेम के बिगुल बजाये !!

पर जबसे
व्यापार बनाया
हमने अपनी कविताई को !
तबसे झूठ हमारा संबल,
सच लिखना ही बंद कर दिया !!

अरे ! हमारी पालकियों को
कितने छत्र उठाते आये !
और युगों से
हम शासन को
शासक–धर्म सिखाते आये !!

हम कवियों ने
समय समय पर
वीरों का इतिहास लिखा है !
और समय के शिलापृष्ठ पर
जन–मन का संत्रास लिखा है !!

किन्तु दुखद है
जबसे गिरवी रख दी
अपने मन की पूँजी !
सिर्फ कलम घिसते रहते हैं
पर लिखना ही बन्द कर दिया !!

जनम – जनम तक हम

– ज्ञान प्रकाश आकुल

जनम – जनम तक हम
अपनी कमजोरी गाएंगे,
राजा साहब सोएंगे हम लोरी गाएंगे!

राजा के स्वागत की खातिर
फूल रखेंगे डलियों में,
राजा की महिमा गाएंगे
राजपथों पर गलियों में

हम अपने सारे दुख चोरी चोरी गाएंगे!

राजा की मशाल में हँस कर
देंगे प्राण पतंगों से
पोतेंगे चेहरा, राजा के ही
मनमाफिक रंगों से

जब जब खून बहेगा हम सब होरी गाएंगे!

आवाजें घायल कर लेंगे
गला फाड़कर नारों से
राजा की तुलना होगी जब
ईश्वर के अवतारों से

भजन भूख के थाली और कटोरी गाएंगे !

यह षड़यंत्रों की महाकथा

– स्वयं श्रीवास्तव

यह षड़यंत्रों की महाकथा
गाथा यह शक्ति सन्तुलन की
यह पाप पुण्य का निर्णय भी
यह कथा मोह की , बन्धन की

सौ बार शांति के पक्षधरों ने बात यही दोहराई
अब तो बस कर मेरे भाई

शांति बड़ी है किंतु बताओ मूल्य शांति का क्या हो
अधिकार सदा वंचना सहे, और लोभ की सदा जय हो
और युद्ध नहीं केवल वह ही जो होते कुरुक्षेत्रों में
युद्धों की नींव रखी धृतराष्ट्रों के मूंदे नेत्रों में
इस महासमर का शिलान्यास शकुनि के ही जैसों ने
कुरुओं की राजसभाओं में, द्रौपदियों के केशों ने

कृष्ण न्याय है यही कि सबको मिलती करम कमाई
अब तो बस कर मेरे भाई

यह प्रतिहिंसक था कर्ण के जिसके काम चढ़ा कांधे पर
और क्रोध नशे का रूप धरे बैठा दुर्योधन सर पर
यह अंहकार, धृतराष्ट्र बना बैठा था सिंहासन पर
और लोभ वहीं पर जहां द्रोण बैठे थे कुछ सकुचाकर
यह मोह उपस्थित स्वयं पितामह बनकर शीश झुकाकर
यह काम क्रोध मद लोभ मोह थे पांचों उच्च शिखर पर

रो–रो कर द्रुपद सुता शैतानों को देती रही दुहाई
अब तो बस कर मेरे भाई

यह स्वप्न शांति का सिर्फ एक की आंखों में पलने से
है शांति नहीं सम्भव दूजे के हिंसा में जलने से
औचित्य विचारों युद्धों का , पर प्रथम धर्म भी जानो
युद्धों से मूल्य सुरक्षित हो तो वही धर्म है मानो
यह शांति युद्ध था पृथ्वी पर साधारण युद्ध नहीं था
केशव नामक वो जगसारथि तो धर्म विरुद्ध नहीं था

संधिपत्र लेकर बैरंग लौटे थे कुँवर कन्हाई
अब तो बस कर मेरे भाई

प्रतिउत्तर न हो तो राजा को धरती हीन करेंगे
इनके वंशज फिर से नारी को वस्त्रविहीन करेंगे
आदेश चक्रधारी का, पापों की वंशावली खँगालो
हे अर्जुन, बन्धु बांधवों के आचरणों को मथ डालो
हिंसा से बचते हो लेकिन हिंसा क्या है ये जानो
यदि सही व्यक्ति भी गलत पक्ष में खड़ा, गलत ही मानो

जिन पैरों में फटती केवल जाने वही बिवाई
अब तो बस कर मेरे भाई

है धर्म वही जिसमें शस्त्रों से निर्बल सरंक्षित हो
है धर्म वही जिसमें दीनों , दुखियों का सबका हित हो
है धर्म वही जिसको धारण करने में सात्विकता हो
है धर्म वही पर जहाँ सत्य सौ प्रतिशत प्रायिकता हो
जब कर्म विचार तंतु अपृथक हों आपस में जुड़ जाएं
श्रेष्ठ विचार , सर्वश्रेष्ठ कर्म जुड़कर ही धर्म कहायें

केशव ने गीता में अर्जुन को बात यही समझाई
अब तो बस कर मेरे भाई

अम्मा के दिल में बसता है अम्मा का नालायक बेटा।

जिसके लिए वक्ष में अपने
पानी पीकर दूध बनाया।
जिसको कुम्हलाया देखा तो,
झर – झर दृग से अश्रु बहाया।

वह सारे सुख को पाकर भी बना रहा दुखदायक बेटा।

जिसके लिए बेच डाला था,
गहना – गुरिया, थरिया – लोटा।
समझ रही थी जिसे अशरफी
वह निकला इक सिक्का खोटा।

किन्तु रहा बनकर नजरों में जैसे कोई नायक बेटा।

यह जग विष के घट जैसा है,
अम्मा में पीयूष भरा है।
हर तपती दोपहरी में बस,
एक ठाँव उसका अँचरा है।

वह पगली अब भी कहती है, तू है मेरा लायक बेटा!

–राकेश मिश्र 'सरयूपारीण'

कितना आसान था

– राजेश मल्ल

कितना आसान था
दीवाली में उन घरों को पहचानना
जिन घरों के चिराग
महामारी में असमय बुझ गए।

दुःख की मोटी चादर ओढ़े
चुपचाप खड़े घर
रौशनी की रौनक और
पटाखों की आवाज से बेखबर
बच्चों को मनाने में जुटे थे कि समझो
हम नहीं शामिल हैं इस पर्व में
कि हमारे भीतर कुछ ख़ाली हो गया है
जिसे नहीं भरा जा सकता है इस जीवन में।

सुबह से ही वे काँप रहे थे
कि जल्दी से बीत जाए यह दिन और रात
क्योंकि हँसते खिलखिलाते बच्चों को बताना
बहुत मुश्किल था कि
हम नहीं शामिल हैं इस पर्व के उल्लास में।

बाजार सजा था
सजा था पूजा का पंडाल
जगमगा रहा था पूरा शहर और पूरी कायनात।
तेज रोशनी और फूटते पटाखों के बीच
फूटती रुलाइओं और धुँधली आँखों में
बसी हुई हैं उनकी तस्वीरें
जो अब लौट के नहीं आएंगे
तमाम त्योहारों में।

हाथों में दीया लिए
भीगी आँखों से देख रहा हूँ
बुझे हुए दीपों की दीपावली।

धरती के कागज पर मेरी तस्वीर अधूरी रहनी थी

– भारत भूषण

तू मन अनमना न कर अपना, इसमें कुछ दोष नहीं तेरा
धरती के कागज पर मेरी, तस्वीर अधूरी रहनी थी

रेती पर लिखे नाम जैसा, मुझको दो घड़ी उभरना था
मलयानिल के बहकाने पर, बस एक प्रभात निखरना था
गूँगे के मनोभाव जैसे, वाणी स्वीकार न कर पाए
ऐसे ही मेरा हृदय–कुसुम, असमर्पित सूख बिखरना था
जैसे कोई प्यासा मरता, जल के अभाव में विष पी ले
मेरे जीवन में भी कोई, ऐसी मजबूरी रहनी थी

इच्छाओं के उगते बिरुवे, सब के सब सफल नहीं होते
हर एक लहर के जूड़े में, अरुणारे कमल नहीं होते
माटी का अंतर नहीं मगर, अंतर रेखाओं का तो है
हर एक दीप के हँसने को, शीशे के महल नहीं होते
दर्पण में परछाई जैसे, दीखे तो पर अनछुई रहे
सारे सुख–वैभव से यूँ ही, मेरी भी दूरी रहनी थी

मैंने शायद गत जन्मों में, अधबने नीड़ तोड़े होंगे
चातक का स्वर सुनने वाले, बादल वापस मोड़े होंगे
ऐसा अपराध किया होगा, जिसकी कुछ क्षमा नहीं होती
तितली के पर नोचे होंगे, हिरनों के दृग फोड़े होंगे
अनगिनती कर्ज चुकाने थे, इसलिए जिंदगी भर मेरे
तन को बेचौन विचरना था, मन में कस्तूरी रहनी थी।

श्रृंगार है हिंदी

– राजीव राज

हर दिल जो गुनगुनाए वो नज़्म है हिंदी,
नश्तर को फूल कर दे वो अज़्म है हिंदी।
इंसानियत की खुशबू, तहज़ीब–ए–जिंदगी,
जिसकी फिज़ाओं में बहें वो बज़्म है हिंदी।।

भाषा ही नहीं, भावना महान है हिंदी,
भारत के रोम–रोम की पहचान है हिंदी।
क्यों कैक्टसों की पौध लगा, फूल रहे हो,
आँगन में लगी तुलसी के समान है हिंदी।।

कबीरा, सूर, मीरा का अखिल संसार है हिंदी,
सुशोभित शारदा माँ के गले का हार है हिंदी।
जिसे भूले हो तुम पाश्चात्य के व्यामोह में फँसकर,
उसी जननी स्वरूपा भूमि का श्रृंगार है हिंदी।।

पलकों पे उठा लो

– दुष्यन्त कुमार

ये जो शहतीर है पलकों पे उठा लो यारो।
अब कोई ऐसा तरीका भी निकालो यारो।।

दर्द–दिल वक्त पे पैगाम भी पहुँचाएगा,
इस क़बूतर को ज़रा प्यार से पालो यारो।

लोग हाथों में लिए बैठे हैं अपने पिंजरे,
आज सैयाद को महफ़िल में बुला लो यारो।

आज सीवन को उधेड़ो तो जरा देखेंगे,
आज संदूक से वो ख़त तो निकालो यारो।

रहनुमाओं की अदाओं पे फ़िदा है दुनिया,
इस बहकती हुई दुनिया को सँभालो यारो।

कैसे आकाश में सूराख़ हो नहीं सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।

लोग कहते थे कि ये बात नहीं कहने की,
तुमने कह दी है, तो कहने की सज़ा लो यारो।

"अभ्युदय सेवा संस्थान"
की वार्षिक पत्रिका एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की हार्दिक शुभकामनायें

APOORVA PATHOLOGY UMNAO

अपूर्वा पैथालॉजी

रजि. 871

घर से सैम्पल लेने की सुविधा उपलब्ध है।

हमारे यहाँ खून, पेशाब, बलगम, थायराइड, हारमोंस, विटामिन आदि की जाँचें उचित मूल्य पर की जाती हैं।

मो. 7054161217, 7388695326, 9307980323

पता : 106, आदर्श नगर, जिला अस्पताल के सामने (गेट नं.2) – उन्नाव

प्रीति किसके सँग निभानी

– इति शिवहरे

प्रीति किसके सँग निभानी,
रीति किसके सँग निभानी,
है यही सबकी कहानी!

एक परिचित गेह में, कितने अपरिचित मन रहे हैं।
कौन, किसका हो सका है बस प्रतिस्थापन रहे हैं।
साधना का पुण्य–फल अभ्यर्थना के भाग्य आया।
संगिनी ने प्रेयसी का फूल जूड़े में सजाया।

हो भले अभिव्यक्ति कितनी,
मूक सहमति जीत जानी।
है यही सबकी कहानी!

मांगलिक शहनाइयों से शोकमय ध्वनि भी सुनी है।
जब थिरकने को अधर ने सिसकियों की लय चुनी है।
नववधू की पालकी में भी मिले निष्प्राण तन–मन।
सप्तपद में भी दिखे हैं, टूटते कितने प्रणय–प्रण!

देह मुरझाई हुई, फिर भी
चढ़ा है रंग धानी।
है यही सबकी कहानी!

चाह में पीयूष के घट जल भरे फोड़े गए हैं।
तब तृषित–व्याकुल हृदय, विष–घूँट पीकर भी जिये हैं।
छूटना है वह सभी–कुछ जो कुचक्रों का जना है।
अंततः जो प्राप्त है, पर्याप्त उसको मानना है।

और अनचाही मिली हर वस्तु,
मनचाही बनानी।
है यही सबकी कहानी!

National Public School
BALAJI INTERNATIONAL INTER COLLEGE

स्थान- ब्लाक के सामने दॉयी ओर (ऊपर वाला विद्यालय), अचलगंज- उन्नाव Cont.: 9044222765

Admission Open 1st March ● P.G. to 12th

SPECIALITIES

- Teaching by Projector
- Advance computer Lab
- Generator Facilities
- Transport Facilities
- C.C.T.V. Cameras Facilities
- Moderate Fees
- Teaching by L.E.D. T.V.
- Teaching by trained teacher
- Enrichment occasional
- (Exhibition fair, achievements
- program Tour visit)
- Tuition Facilities

- प्रोजेक्टर के माध्यम से शिक्षण व्यवस्था
- कम्प्यूटर प्रयोगशाला के द्वारा उचित शिक्षण व्यवस्था
- जनरेटर की उचित व्यवस्था
- स्कूल वाहनो की व्यवस्था
- कैमरे की व्यवस्था
- कम शिक्षण शुल्क मे उचित शिक्षा की व्यवस्था
- **LED T.V.** के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था
- अनुभवी शिक्षको के द्वारा शिक्षा प्रदान करना
- बच्चो के उज्जवल भविष्य हेतु कार्यक्रमो का आयोजन (कला एव विज्ञान प्रदशनी,उपलब्धि प्रदान हेतु कार्यक्रम, पिकनिक)

कमजोर बच्चों के लिए ट्यूशन की उचित व्यवस्था।

अंग्रेजी माध्यम

प्रधानाचार्य
अशोक तिवारी
Mob.: 9721470196

वाहन सुविधा

विश्वास के साथ प्रवेश ले.....

सौजन्य से
रामबाबू तिवारी
माँ अन्नपूर्णा गेस्ट हाउस
अचलगंज, उन्नाव

मेरी आदर्श शिक्षक

– अवधेश कुमार श्रीवास्तव
सेवानिवृत्त

मातु पिता अरु गुरु तीनों ही, शिक्षक हैं इस जीवन के
अपनी अपनी तरह से देते, ज्ञान हमें जीवन धन के
आदर्श शिक्षिका माँ मेरी, जिसने तन, मन सब खपा दिया
मेरे सर्वांगीण विकास हेतु, निज का जीवन ही गँवा दिया
अपने पे ध्यान दिया ही नही, मेरे पर ,तन मन वार किया
हमको पाला सुख दे सारे,खुद के सुख से इंकार किया
क्या कहूं !

जितने दिन जिंदा रहीं धरा पर ,आदर्श हमें सिखलाया है
एक टाँग पर टिक कर ही हमको ,अच्छे से नहलाया है
उसने ही था बतलाया मुझको, पिता और घर के रिश्ते
क्या कीमत उसकी उनमें है ,कभी न समझे महंगे सस्ते
प्रारंभिक आवश्यक सब शिक्षा,उसने जीते जी दी मुझको
कैसे अब जीना होगा तुमको,यह भी राह बता दी मुझको
आभास हो गया जाने का ,इसलिए लिपट कर सोती थी
कहीं देख न लूँ मैं उसको, मुँह छिपा के रजाई में रोती थी
उठना और बैठना कैसे, सब कुछ हमें सिखाया उसने
क्रोधित होती खुद्दारी से ,सहना भी हमें सिखाया उसने
पांच बरस की सीख मातु की ,पाँच जन्म की न्यामत मेरी
आज सहारे उन्हीं सीख के, संभल रही है मति आहत मेरी
ओ मां मेरी!!

घर का स्वाद

स्वाद वही जो मन को भाए...

प्रो. अरविन्द श्रीवास्तव
9415167209

स्वादिष्ट राजमा, छोला, कढ़ी–चावल
गरम हलुआ, रसगुल्ला, ठण्डी खीर इत्यादि उपलब्ध

प्रातः स्मरणीय स्मृतिशेष पिताजी बसन्तलाल श्रीवास्तव एवं
स्मृतिशेष माताजी उर्मिला देवी श्रीवास्तव के चरणों में नमन करते हुए हम...

''अभ्युदय सेवा संस्थान''

द्वारा

चतुर्थ स्मारिका प्रकाशन एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के पावन पर्व पर मंगल कामनाये प्रेषित करते हैं।

स्व. उर्मिला श्रीवास्तव **स्व. बसन्तलाल श्रीवास्तव**

अनूप कुमार श्रीवास्तव एडवोकेट - **श्रीमती अनीता श्रीवास्तव**

डॉ. हर्षित खरे - डॉ. आकांक्षा श्रीवास्तव

अपूर्वा श्रीवास्तव - अपूर्व श्रीवास्तव

6/919, विकास नगर, लखनऊ

दो रचनाएँ
(बरवै छन्दों में)

साहित्य

– दिनेश उन्नावी

करत भानु ज्यों जगमग, सकल जहान।
त्यों साहित्य करता नित, जग कल्यान।

कवि–लेखक नित देवैं, अइसि विचार।
जे समाज मा लावैं, उचित सुधार।

है समाज का दरपन, अदब महान।
निशि–दिन जग हित मो रत, सो वरदान।

बाँधत एकुइ धागहिं, देशु– समाज।
तहि ते उपजत एका, उचित रिवाज।

कवि–लेखक की नजरिन, सबै समान।
छुआ–छूत नहिं मानत, अदब विधान।

पूरक इक–दूजे के, अदब–समाज।
अलग अदब ते कबहूँ, नाहिं समाज।

नव साहित्य रचैं नित, कवि–विद्वान।
ताकि होय यहि जग का, नित उत्थान।

गुरुवर

– दिनेश उन्नावी

महिमा गुरु कै जग बिच, अगम–अपार।
आपति काले गुरु ही, सकत उबार।

तम हरिबे हित बारत, अपनि मशाल।
गुरु का जिया हमेशा, होत विशाल।

निज गुरु के प्रति शिष जो, राखत नेहु।
वहु पावत प्रभुवर ते, साँच सनेहु।

शिष इक काँचा कलशा, गुरू कुम्हार।
रुचि–रुचि ठोंकत–पीटत, देत अकार।

गुरु की नेक नजर बिनु, भव नहिं पार।
अँधियारे बिच गुरुवर, करत उज्यार।

गुरु का आशिष पायउँ, भयउँ सनाथ।
गुरु चरनन मा सादर, नावउँ माथ।

धूरि गुरू के पद कै, निज सिर धारि।
धवल कीर्ति निज जग महुँ, सकत पसारि।

चन्द ख्वाबों के अता करके, उजाले मुझको। कर दिया वक्त ने, दुनिया के हवाले मुझको।।
जिनको सूरज, कभी मेरी चौखट से मिला करता था। वही खैरात में देते हैं, उजाले मुझको।।
- नईम अख्तर कादमी

प्रात: स्मरणीय वन्दनीया

हमारी अम्मा स्मृतिशेष कमला श्रीवास्तव एवं

हमारे पिता स्मृतिशेष लक्ष्मीनरायण श्रीवास्तव

की स्मृतियों को संजोते हुए हम सब

अभ्युदय सेवा संस्थान

द्वारा

आयोजित अखिल भारतीय काव्य समारोह एवं चतुर्थ स्मारिका के प्रकाशन पर अपनी मंगल कामनायें प्रेषित करते हैं।

चि. अशोक श्रीवास्तव

से.नि.सहायक प्रबन्धक (भारतीय रिजर्व बैंक)

पूर्व सचिव-हिमालया इन्कलेव हाउसिंग सोसायटी, वृन्दावन-लखनऊ

/

माधुरी श्रीवास्तव

हिमालया इन्कलेव- लखनऊ

चि. अंकित श्रीवास्तव व कृतिका श्रीवास्तव

चि. अभिनीत एवं अंकिता श्रीवास्तव, (पीहू)

पर्यावरण प्रदूषण

– डॉ कृष्ण कुमार मिश्र
पूर्व प्रधानाचार्य– जनता हा0से0स्कूल, रऊकरना

पर्यावरण प्रदूषण से ही धरती का संताप बढ़ा है।
मानव जीवन संकट में है, जड़ चेतन का ताप बढ़ा है।

सूरज उगल रहा है गर्मी, लू के यहाँ थपेड़े देखे।
कितने जान गवाँ बैठे हैं, कितने यहाँ झमेले देखे।।
ऋतुओं का ही चक्र वक्र है और मनुज का पाप बढ़ा है।

गैसों का उत्सर्जन करके, संवेदना शून्य है मानव।
कमी हो गयी प्राण वायु की हम सब वृक्षों के हैं दानव।।
कहीं नहीं रह गया सन्तुलन बीमारी का ग्राफ बढ़ा है।

मानव की है यही कामना गंगाजल का करूँ आचमन।
मृत्यु बाद भी यही चाह है सुरसरि में हो महा विसर्जन।।
गंगा माँ की हत्या करने का भी तो अभिशाप बड़ा है।

पर्यावरण, सुसंरक्षित हो, नदी–सरोवर का हो अर्चन।
धरा, गगन, जल, अनिल, अनल का, फिर फिर हो नित प्रति अभिनन्दन।।
आज चराचर सभी दुखी हैं, ऐसा क्रिया कलाप बढ़ा है।।

"अभ्युदय सेवा संस्थान"
द्वारा आयोजित अखिल भारतीय काव्य समारोह एवं
स्मारिका के प्रकाशन पर
हम बनाते है भविष्य....
R.K. Montessori High School
Head Office - Near Purana Tempo Stand, Mohan- Unnao
Email : rkmontessori66@gmail.com
Mob.: 8948133181, 7571016881, 9452706537

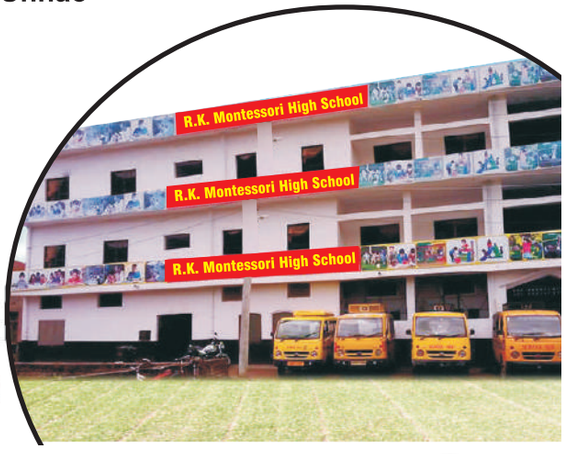

"अभ्युदय सेवा संस्थान"

द्वारा

आयोजित अखिल भारतीय काव्य समारोह एवं चतुर्थ स्मारिका

के प्रकाशन पर

स्व. आर.जी. चौधरी
(पूज्य बापू जी)

श्रीमती किशोरी देवी जी चौधरी
(पूजनीया माता जी)

संजीव चौधरी

के चरणों में नमन करते हुए हार्दिक शुभकामनायें

शुभाकांक्षी

संजीव कुमार चौधरी

बीना चौधरी, वरूण चौधरी, सुहानी, सिद्धान्त, मोती नगर – उन्नाव

❖❖❖

''अभ्युदय सेवा संस्थान''

द्वारा

आयोजित अखिल भारतीय काव्य समारोह एवं चतुर्थ स्मारिका

के प्रकाशन पर पधारे वाणी पुत्रों का स्वागत, अभिनन्दन एवं वन्दना।

रंजीत चौधरी

- शोभित चौधरी
- रूपसी चौधरी
- चित्रांशी चौधरी

मोती नगर, उन्नाव

आशा चौधरी

आभार

जिस–जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस–उस राही को धन्यवाद।

– डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

जीवन अस्थिर अनजाने ही, हो जाता पथ पर मेल कहीं,
सीमित पग डग, लम्बी मंजिल, तय कर लेना कुछ खेल नहीं।
दाएँ–बाएँ सुख–दुख चलते, सम्मुख चलता पथ का प्रसाद ––
जिस–जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस–उस राही को धन्यवाद।

साँसों पर अवलम्बित काया, जब चलते–चलते चूर हुई,
दो स्नेह–शब्द मिल गये, मिली नव स्फूर्ति, थकावट दूर हुई।
पथ के पहचाने छूट गये, पर साथ–साथ चल रही याद ––
जिस–जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस–उस राही को धन्यवाद।

जो साथ न मेरा दे पाये, उनसे कब सूनी हुई डगर?
मैं भी न चलूँ यदि तो भी क्या, राही मर लेकिन राह अमर।
इस पथ पर वे ही चलते हैं, जो चलने का पा गये स्वाद ––
जिस–जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस–उस राही को धन्यवाद।

कैसे चल पाता यदि न मिला होता मुझको आकुल अंतर?
कैसे चल पाता यदि मिलते, चिर–तृप्ति अमरता–पूर्ण प्रहर!
आभारी हूँ मैं उन सबका, दे गये व्यथा का जो प्रसाद ––
जिस–जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस–उस राही को धन्यवाद।

राधे-राधे राधे-राधे राधे-राधे

"अभ्युदय सेवा संस्थान"

की वार्षिक पत्रिका एवं अखिल भारतीय
कवि सम्मेलन
की हार्दिक शुभकामनाएं

श्री राधा रानी
साड़ीज

पता : 28, जगन्नाथगंज, बस स्टेशन के सामने, उन्नाव

Cont.: 9415053963, 9415312163, 8127120932

कुंडली तो मिल गई है

– इति शिवहरे

कुंडली तो मिल गई है,
मन नहीं मिलता, पुरोहित!
क्या सफल परिणय रहेगा?

गुण मिले सब जोग वर से, गोत्र भी उत्तम चुना है।
ठीक है कद, रंग भी मेरी तरह कुछ गेंहुआ है।
मिर्च मुझ पर माँ न जाने क्यों घुमाये जा रही है?
भाग्य से है प्राप्त घर–वर, बस यही समझा रही है।

भानु, शशि, गुरु, शुभ त्रिबल, गुण–दोष,
हैं सब–कुछ व्यवस्थित,
अब न प्रति–पल भय रहेगा?

रीति–रस्मों के लिए शुभ लग्न देखा जा रहा है।
क्यों अशुभ कुछ सोचकर, मुँह को कलेजा आ रहा है?
अब अपरिचित हित यहाँ मंतव्य जाना जा रहा है।
किंतु मेरा मौन हाँ की ओर माना जा रहा है।

देह की हल्दी भरेगी,
घाव अंतस के अपरिमित?
सर्व मंगलमय रहेगा?

क्या सशंकित मांग पर सिंदूर की रेखा बनाऊँ?
सात पग भर मात्र चलकर साथ सदियों का निभाऊँ?
यज्ञ की समिधा लिए फिर से नए संकल्प भर लूँ?
क्या अपूरित प्रेम की सद्भावना उत्सर्ग कर दूँ?

भूलकर अपना अहित–हित,
पूर्ण हो जाऊँ समर्पित?
ये कुशल अभिनय रहेगा!
क्या सफल परिणय रहेगा?

''अभ्युदय सेवा संस्थान'' द्वारा आयोजित अखिल भारतीय काव्य समारोह एवं चतुर्थ स्मारिका के प्रकाशन पर

K.S.M. JR. HIGH SCHOOL

Kusum Sinha
K.S.M. JR. HIGH SCHOOL
SHEIKHPUR, UNNAO (U.P.)

विद्यालय का मुख्य उद्देश्य अनुभवी एवं प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा शिक्षण कार्य है।

प्रधानाचार्या
अम्बुजा पटनायक

प्रवेश प्रारम्भ
1 अप्रैल से
30 अप्रैल तक

प्रबन्धक
कै. प्रशान्त पटनायक

448/1, Sheikhpur - Unnao (U.P.) India
Mob.: 7985969834

आदर्श नगर पंचायत बीघापुर, उन्नाव की तरफ से ''अभ्युदय सेवा संस्थान'' द्वारा आयोजित सप्तम् अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

नगर पंचायत आपसे निम्न अपेक्षाएं करती है

१. जन्म-मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करायें।
२. नगर आपका है इसे स्वच्छ बनाने में सहयोग दें।
३. नालियों में कूड़ा व पॉलीथीन न डालें।
४. कूड़ा निर्धारित कूड़ेदान में ही डालें।
५. जलकर व गृहकर की आदायगी समय पर करें।
६. शुष्क शौचालयों को जल प्रवाहित शौचालयों में परिवर्तित करवा लें।
७. पॉलीथीन का विक्रय उपयोग प्रतिबन्धित है, दोष सिद्ध होने पर कारावास व जुर्माना हो सकता है।
८. जल ही जीवन है नल की टोटी खुली न छोड़े।

बीघापुर नगर पंचायत में विकास के आयाम

राजकीय बीज भण्डार का निर्माण, बारातशाला, कान्हा गौशाला, आसय कॉलोनी, लाइब्रेरी का निर्माण तालाबों का सौन्दर्यीकरण, शेष आबादी का विद्युतीकरण, सीमा विस्तार मार्गों में स्ट्रीट लाइट जनरेटर की व्यवस्था, पेयजन के लिए 5 आर.ओ. कूलर व पानी की छोटी टँकियाँ, मुख्य मार्ग का निर्माण व चौड़ीकरण

नगर पंचायत के बहुमुखी विकास व जरूरतमंद बेसहारा लोगों की मदद के लिए हर पल तत्पर रहकर आप सबके मार्ग दर्शन सहयोग व आशीर्वाद के साथ सेवा के लिए कृत संकल्पित हूँ।

अंकिता देवी
अधिशाषी-अधिकारी
नगर पंचायत-बीघापुर

सुधीर बाजपेई
अध्यक्ष-प्रतिनिधि-
नगर पंचायत-बीघापुर

सुशील कुमार बाकुश
अध्यक्ष
नगर पंचायत-बीघापुर

"अभ्युदय सेवा संस्थान"

द्वारा आयोजित अखिल भारतीय काव्य समारोह एवं चतुर्थ स्मारिका के प्रकाशन पर

यशशेष हमारे कुल गौरव स्मृतिशेष मुरारीलाल श्रीवास्तव व स्मृतिशेष आशा देवी श्रीवास्तव की स्मृतियाँ आज भी हमारे हृदय में ऊर्जा भरती है। हम उन्हें पूर्ण श्रद्धाभाव से नमन करते हैं।

पुत्री- डॉ. गीता श्रीवास्तव
दामाद- श्री अजय कुमार श्रीवास्तव
नातिन- अंजली श्रीवास्तव

पुत्र- अजय श्रीवास्तव 'राजन'
पुत्रवधू-श्रीमती लतादेवी श्रीवास्तव
सुपौत्री- रोहिणी, सुपौत्र-तेजस

पुत्र- विजय श्रीवास्तव
पुत्रवधू- श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव
सुपौत्र- समर्थ, सुपौत्री- दिशा

परम आदरणीय अपने बाबूजी स्मृतिशेष प्यारेलाल श्रीवास्तव जी की याद में।

"अभ्युदय सेवा संस्थान"

द्वारा आयोजित अखिल भारतीय
विराट काव्योत्सव पर प्रकाशित वार्षिक
स्मारिका 'अभ्युदय' के प्रकाशन पर
अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

अवधेश कुमार श्रीवास्तव
सेवानिवृत्त बैंक कर्मी

श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सामान्य गृहणी

निधि-अजिताभ निशान्त - रूचिका नेहा-सौरभ अग्रिया एवं अद्वित

हिन्दी की व्यथा

हिंदी दिवस के मौके पर क्या
अंग्रेजी में भाषण देना सही है?
हम भले ही हो जाएं आधुनिक परंतु
हमारी मातृभाषा अभी भी वही है।

हिंदी है आज काफी चिंतित,
हमने उसका तिरस्कार कर उसे रुलाया है।
लोगों की आधुनिकता व मानसिकता ने हमें,
अंग्रेजी नामक गहरी नींद में सुलाया है।

हम कहलाते थे हिंदू देश के वासी,
गर्व था हिंदी पर जिसने हमें आजाद कराया है।
कहाँ गई वो संस्कृति तथा गर्व,
जो आज हमने अपनी मातृभाषा को ठुकराया है।

इस आधुनिकता के दौर में,
हम अपनी संस्कृति को छोड़ चुके हैं।
मातृभाषा छोड़ दूसरी भाषा अपनाने से,
एकता के पवित्र बंधन को भी तोड़ चुके हैं।

इस कलयुग में सभी लोग,
दिखावे की दुनिया में रहते हैं।
जो प्रयोग करें इस पवित्र भाषा का,
उसे हम पिछड़ा हुआ कहते हैं।

जाते–जाते हिंदी हम सबसे
एक कठोर सत्य कह गई है।
अब वह हमारी मातृभाषा नहीं
एक भाषा मात्र रह गई है।

– चित्रांशी चौधरी
कक्षा–12 अ
लखनऊ पब्लिक स्कूल, उन्नाव

अगर तुम अपेक्षा ही छोड़ दो, तो तुम्हें क्या कोई दुख दे सकेगा?

अगर तुम अपेक्षा छोड़ दो, कोई माँग न रहे– क्योंकि तुम जाग गए कि मिलना किसी से कुछ भी नहीं है– तो तुम अचानक पाओगे तुम्हारे जीवन से दुख विसर्जित हो गया। अब कोई दुख नहीं देता।

सुख न माँगो तो कोई दुख नहीं देता।

तब तो बड़ी अभूतपूर्व घटना होती है। तुम सुख नहीं मांगते, कोई दुख नहीं देता। न बाहर से सुख आता है, न दुख आता है। पहली बार तुम अपने में रमना शुरू होते हो, क्योंकि अब बाहर नजर रखने की कोई जरूरत ही न रही।

–ओशो

वादा करके न आए

– राघव निगम

दिल की नादानियाँ अब चुभने लगी हैं।
तेरे बगैर जिन्दगी अब खलने लगी हैं।।

कल का वादा कर के न आए अब तलक।
उम्र भी रफ्ता रफ्ता अब ढलने लगी है।।

तेरे ख़तों को भी रखने से क्या फायदा।
तेरी लिखावट की स्याही भी जब उड़ने लगी है।।

तोड़ डाले घर के सारे आइने मैंने उस दिन।
जब अपने ही चेहरे की झुर्रियाँ एकाध दिखने लगी हैं।।

ये सजा है या आजाबे इश्क है मेरे खुदा।
कि उसके जिक्र से भी उलझन होने लगी है।।

तू सूरज बनकर जल

– ऋचा

रोशनी वाले झरोखे से अंधियारा जब आने लगे
टूटने लगे आस मायूसी जब छाने लगे

जब उम्मीद की किरणों से नाउम्मीदी जगमगाने लगे
हर शख्स खास दूर जब जाने लगे

डूबने लगे नाव जब दूर किनारे लगने लगे
ढलने लगे शाम जब अंधियारा गहराने लगे

बन्द कर दे झरोखों को चिंगारियां जब दिल मे सुलगने लगे
हवा दे तू उन्हें हौसलों की जब तूफान दहलाने लगे

आशा के हाथ जब हौसलों को सहलाने लगे
तू आदमी है हौसलों का जब हार को जीत बनाने लगे

हार मानकर न बैठ तू जीतने में चाहे जमाने लगे
तारीफ तब है जब तू हार में भी खुशियाँ मनाने लगे

बन्द कर दे झरोखा अंधियारा जब आने लगे
तू सूरज बनकर जल अंधियारा जब गहराने लगे

गम न कर हार जीत का जब रण में शत्रु बुलाने लगे
जीत नही तो सीख सही यही जानने में जमाने लगे

रोशनी वाले झरोखे से अंधियारा जब आने लगे
बन्द कर दे झरोखा अंधियारा जब गहराने लगे।।

"अभ्युदय सेवा संस्थान" के कार्यों को नमन करते हुए हमारा परिवार

अपने बुजुर्गों को याद करते हुए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

पूज्य पिता जी स्मृतिशेष द्वारिका प्रसाद श्रीवास्तव एवं
पूज्या माता जी स्मृतिशेष शिव दुलारी श्रीवास्तव

के.के. श्रीवास्तव
एवं
किरन श्रीवास्तव

भवदीय

के. के. श्रीवास्तव पूर्व सहायक महाप्रबन्धक (बैंक ऑफ इण्डिया)
प्रान्तीय संगठन सचिव, भारत विकास परिषद (ब्रह्मावर्त प्रान्त)
किरन श्रीवास्तव, गौरव श्रीवास्तव, स्वाति श्रीवास्तव, अनय श्रीवास्तव, आशी श्रीवास्तव
नि. **A-26,** आवास विकास – उन्नाव

जिनकी बदौलत है कोठी

जिनकी बदौलत है कोठी तुम्हारी ,
मकां उनके तुमको कच्चे मिलेंगे।

जिनकी बदौलत है रोटी तुम्हारी
बिलखते तुम्हें उनके बच्चे मिलेंगे।

जिनको रुलाया समझ दीन तुमने
उनके हृदय तुमको सच्चे मिलेंगे।।

धन से लबालब मिलेंगे बहुत पर
मगर उन गरीबों से न अच्छे मिलेंगे।

नई पीढ़ी जिससे है उम्मीद मेरी
सभी के सभी तुमको चच्चे मिलेंगे।

तुम्हें जिनसे आशा भले की मगर
उनके हाथो में तुमको तमंचे मिलेंगे।

बहुत लोग हैं जिन्हें जग की चिन्ता
बहुत तो तुम्हें राष्ट्रद्रोही टुच्चे मिलेंगे।

– **मोहित वर्मा**
भतावां उन्नाव उत्तर प्रदेश
मो.: 8858138740

"अभ्युदय सेवा संस्थान" के कार्यों को नमन करते हुए
हमारा परिवार

अपने स्मृतिशेष परिजनों को याद करते हुए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

स्मृतिशेष इन्द्र बहादुर अस्थाना
पुत्र : शारदा नाथ अस्थाना

स्मृतिशेष शरद कुमार अस्थाना
पुत्र : इन्द्र बहादुर अस्थाना

स्मृतिशेष सरोजनी अस्थाना
पत्नी: इन्द्र बहादुर अस्थाना

अस्थाना परिवार के सदस्य

- शिशिर कुमार
- श्रीमती शशि अस्थाना
- कु. सूर्यांशी अस्थाना
- श्रीमती चांदनी अस्थाना
- अभिषेक कुमार
- कु. आध्या अस्थाना
- आशीष
- तेजस

गीत

चांद के पार हैं इश्क वालों के घर ।
तुमसे मिलने वहीं पर मैं आ जाऊंगा।

इश्क करने की उनसे सजा पूछ लो।
टूटे दिल से गमो की दवा पूछ लो।।
प्यार की इस डगर में हैं कांटे मगर।
इश्क में क्या मजा है जरा पूछ लो।।
मेरी आंखों से आंखे मिलाओ कभी
तेरी आंखों से दिल में उतर जाऊंगा।।
चांद के पार.....––2

कितनी चाहत है तुमसे बताएं तुम्हें।
हाल अपने जिगर का सुनाएं तुम्हें।
रात दिन मेरे ख्वाबों ख्यालों में तुम
अपने सपनों की रानी बनाएं तुम्हें।।
अपने हाथों में मेंहदी रचा लेना तुम
अपनी दुल्हन बनाने मैं आ जाऊंगा।
चांद के पार .....–2

– विमल कवि

तुम जीवित थे तो सुनने को जी करता था, तुम चले गये तो गुनने का जी करता है।
तुम सिमटे थे तो महकी-महकी साँसे थी, तुम बिखर गये तो चुनने को जी करता है।।

स्मृतिशेष सुमन श्रीवास्तव

स्मृतिशेष सुमन श्रीवास्तव
सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव (पति)
पुत्र –प्रखर पुत्रवधू–शाम्भवी
पुत्री– मानसी
दामाद–शोभित
नाती– अथर्व
पुत्री– कृतिका, दामाद–पंकज
नातिन–इशानवी

सुभाष श्रीवास्तव

पता : नरेन्द्र नगर (नागर मिल), उन्नाव मो.: 8318696627

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

– रचना अवस्थी
शिक्षिका

जन्म वो ले नहीं पाती कोख में ही क्यों मरती है
किया अपराध क्या ऐसा, न माँ की गोद मिलती है।
होके निर्दोष भी वो क्यों, ऐसा दण्ड पाती है,
जहाँ में आने से पहले, कत्ल क्यों कर दी जाती हैं।।

है जीवनदायिनी शक्ति इन्हें ही क्यों मिटाते हैं।
गए हैं भूल शायद हम, इन्हीं से जन्म पाते हैं।
न होंगी बेटियाँ तो फिर धरा का रूप क्या होगा,
कहीं चूड़ी न खनकेगी, न पायल का निशाँ होगा।

वो घर आँगन नहीं जँचता, जहाँ बेटी नहीं पलती।
वो उपवन ही भला कैसा, जहाँ तितली नहीं उड़ती।
खिलने दो नन्हीं कलियों को, इन्हें भी पुष्प बनने दो,
सँवर जायेगा ये उपवन, इन्हें बढ़ने का अवसर दो।।

हार्दिक शुभकामनायें

ठाकुर जी किसान सेवा केन्द्र

ग्राम आटा, पोस्ट बंथर – उन्नाव

खाद, बीज, दवा एवं मशीनों के थोक व फुटकर विक्रेता

प्रो. सर्वेश सिंह

Mob. : 9793998562, 7985016635

पिता....

मैं जब भी टूट जाता हूं ,
वो आकर जोड़ देते हैं ,
मेरी दुविधा को सुविधा में
वो अक्सर मोड़ देते हैं
कोई चट्टान हो सम्मुख ,
तो उसको तोड़ देते हैं ,
मेरी इच्छा की खातिर तो ,
जरूरत छोड़ देते हैं ,
समझना है बहुत मुश्किल ,
पिता का प्रेम ऐसा है ,
मैं खाना छोड़ देता हूं ,
वो खाना छोड़ देते हैं ,

– अभिषेक अस्थाना

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर

जिसको पूरा भारत जाने
वो मातृ की भाषा हिन्दी है।
जिसको पूरा भारत बोले
तो हिन्द की भाषा हिन्दी है।
जो देती है सुविचार हमें
वो भारत की भाषा हिन्दी है।
ना हिन्दू की ना मुस्लिम की
ये प्यार की भाषा हिन्दी है।
जो बिन-देखे जाति-पाति
अमृत ज्ञान जो दे वो हिन्दी है।

– आदर्श सिंह
छात्र– कक्षा–8

"अभ्युदय सेवा संस्थान" द्वारा आयोजित अखिल भारतीय काव्य समारोह एवं चतुर्थ स्मारिका के प्रकाशन पर

स्मृतिशेष श्याम बाबू श्रीवास्तव एवं स्मृतिशेष उमादेवी

के चरणों में नमन करते हुए हार्दिक शुभकामनायें

शुभाकांक्षी

पुत्र– राजीव श्रीवास्तव
पुत्रवधू– श्रीमती नीलम श्रीवास्तव
सुपौत्र– मोहित, हर्षित

पुत्र– पंकज श्रीवास्तव
पुत्रवधू– श्रीमती अंजली श्रीवास्तव

पुत्र– नीरज श्रीवास्तव

बेटियाँ
श्रीमती मीना– राजेश चन्द्र श्रीवास्तव
नातिन– श्रीमती सोनाली– सुमित श्रीवास्तव
परनाती– गुन्नू
नाती– हिमांशु श्रीवास्तव– श्रीमती स्वाती
परनातिन– शिवी

श्रीमती बीना– राजेश श्रीवास्तव
नातिन– ऐश्वर्या

श्रीमती मीरा– सुनील श्रीवास्तव
नाती– अनुभव, राहुल

पुत्र– संजय श्रीवास्तव
पुत्रवधू– श्रीमती सविता श्रीवास्तव
सुपौत्र–उत्कर्ष श्रीवास्तव
सुपौत्र वधू– श्रीमती नैन्सी श्रीवास्तव
सुपौत्र– रितुज श्रीवास्तव

मोहल्ला चौघड़ा, बाँगरमऊ– उन्नाव ● Mob.: 8318957022

अपनी औकात में...

– संध्या रावत
एम.ए. द्वितीय वर्ष

मैं अपनी औकात में खुश हूँ
जैसी भी है हर जाति में खुश हूँ।

नहीं किसी से कुछ चाहा है
मैं तो हर हालात में खुश हूं।

खुशियाँ रूठ गई तो क्या गम,
गैरों की बारात में खुश हूँ।

उन्हें मुबारक उनका सूरज,
मैं तो अपनी रात में खुश हूं

जब तक हंसी नहीं आती है,
आँसू की सौगात में खुश हूँ।

दर्द सहन करना क्या आया,
अपनों के आघात से खुश हूँ।

जश्न जीत का खूब मनाओ,
मैं तो अपनी मात में खुश हूँ।

इसका मतलब जो भी निकले
मैं तो सब बरसात में खुश हूँ।

वह दिमाग से बेशक सोचे
मैं तो दिल की बात से खुश हूँ।

"अभ्युदय सेवा संस्थान" द्वारा आयोजित अखिल भारतीय काव्य समारोह एवं चतुर्थ स्मारिका के प्रकाशन पर
जनपद के अंग्रेजी नॉवेलिस्ट 'सरस आजाद' को उनके नये नॉवेल

"Madly In Love"
के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ
सौजन्य से :
श्री माँ डेन्टल एण्ड आई केयर क्लीनिक
मिश्रा मार्केट, निकट आई.बी.पी. पेट्रोल पम्प, उन्नाव
अन्य प्रतिष्ठान :
कान्हा मेडिकल स्टोर
मोती नगर-उन्नाव
Mob.: 8090121619, 9044120002
Shri Maa Dental & Eye Care Clinic